अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

सौर चैत्र १५, शक १८७२ | सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार
वार्षिक मूल्य ५) | एक प्रति २ आना : नये १३ पैसे

वर्ष–३, अंक–२७ ✠ राजघाट, काशी ✠ शुक्रवार, ५ अप्रैल, '५७

ग्रामदान : आत्म-दर्शन की खोज

यह भूदान-ग्रामदान जो चल रहा है, वह हमारी दृष्टि से आत्मदर्शन की खोज है। जब तक हम अपने को एक देह में सीमित समझते हैं, तब तक हमको आत्मा का दर्शन दूर है। आत्मा किसी एक देह में नहीं, अनेक देहों में है। उनमें से यह हमारा देह एक है। हम अकेले-अकेले मिष्टान्न खाते हैं, तो हमको आनंद होता है; परतु सबके साथ गरीब मनुष्य का सादा भोजन खाते हैं, तो हमको ज्यादा आनंद होता है, क्योंकि आत्मा की व्यापकता हो जाती है। अकेला मनुष्य ध्यान करता है, तो उसमें आनंद आता है, परन्तु पचास मनुष्यों ने एक साथ बैठ कर मौन-प्रार्थना की, तो उसमें ज्यादा आनंद आता है। इस तरह सब लोग एकत्र होकर जो आनंद प्राप्त करते हैं, वह व्यापकता का आनंद है। आत्मा सतत व्यापक बनने के लिए व्याकुल है। यह ग्रामदान उसी दिशा में एक कदम है।

(मेडुंकुलम्, मदुरा, २५-३) —विनोबा

सहजीवन का अमर संदेश

(विनोबा)

आज यहाँ की ब्राह्मण-मंडली ने "तीरुपावै" सुनाया। "तीरुपावै" एक अद्भुत ही काव्य है। वह एक लड़की ने लिखा है। इससे बेहतर चीज तमिल साहित्य में नहीं है। लोगों में उसका जितना प्रवेश होगा, उतना शायद ही और किसी साहित्य का होगा। उसका कारण यह है कि उस छोटी-सी किताब में जो भावना है, वह एक अद्भुत वस्तु है। मार्गशीर्ष महीना आया है। बारिश हो रही है, स्नान के लिए जा रही है, स्नान के बाद भगवान् का दर्शन करना है, परन्तु वह भगवान् के दर्शन के वास्ते अकेली नहीं जा रही है। हरएक घर के लड़कों, बहनों को बुलाती है, जो सोयी हैं, उनको जगाती है। सबके साथ वह भगवान् का दर्शन करना चाहती है। कोई भी भक्त भगवान् के दर्शन के लिए जाते समय दूसरे को याद नहीं करता। जैसे बच्चे को कोई मीठी चीज हाथ में मिल जाती है, तो वह तुरन्त मुँह में डाल देता है। उसको यह याद नहीं रहता कि यह चीज मैं अपने घरवालों को दूँ, वैसे ही भगवद्-दर्शन के लिए भक्त को समाधि लग जाती है, तो वह अपने को भी भूल जाता है। परन्तु "तीरुपावै" में वह चीज नहीं है। उसमें लड़की भगवद्-दर्शन के लिए सबको तपस्या करवाती है। सबको व्रत लेने के लिए कहती है कि "हम दूध नहीं खायेंगे। घी नहीं खायेंगे।" वह "मैं नहीं खाऊँगी", ऐसा नहीं कहती है। "हम नहीं खायेंगे", ये उसके शब्द हैं। यह एक अद्भुत ही वस्तु है।

अक्सर इस प्रकार की भक्ति देखने को नहीं मिलती है। यह हम समझ सकते हैं कि व्यवहार के कामों में सब लोग मिलजुल कर काम करें। परन्तु भगवान् का दर्शन सबसे बड़ी चीज है। परन्तु दर्शन भी वह अकेले करना नहीं चाहती है। इसलिए जब से हमने "तीरुपावै" पढ़ा था, तब से एकदम उसने हमारा दिल खींच लिया है। उसमें जो समूह-भावना है, वह भक्ति, ईश्वर-दर्शन, तपस्या को लागू की है। हमें अकेले-अकेले कुछ नहीं करना चाहिए, जो कुछ करना है, वह सबको मिल कर करना चाहिए।

हम समझते हैं कि लोग अगर इस विचार को समझ लेंगे, तो बाबा को भूदान, ग्रामदान का प्रचार ही नहीं करना पड़ेगा। वह काम तो लोग ही उठा लेंगे। तालीम का इन्तजाम करेंगे, तो सिर्फ हमारे बच्चे के लिए नहीं करेंगे, गाँव के सभी बच्चों के लिए करेंगे। यह तो मैंने मिसाल के तौर पर कहा। इस तरह जीवन की हरएक अच्छी चीजों में सबके साथ भोग करेंगे।

यहाँ तक कि ईश्वर मेरे सामने आयेगा और कहेगा कि तुझे दर्शन देने के लिए आया हूँ, तो कहेंगे कि ठहरिये, जरा मैं लोगों को बुला कर लाता हूँ। यह सच्ची भक्ति है। भगवान् के दर्शन में सबको भूल जाय, यह तो झूठी भक्ति है। सभी को साथ लेकर भोग भोगना चाहिए। वैदिक ऋषि की भी यह भावना थी। "सहनाववतु सहनौ भुनक्तु"—हम सबका एकसाथ संरक्षण करें, यह उन्होंने कहा। हम सब मिल कर एक-साथ पराक्रम करें। आध्यात्मिक साधना भी हम अकेले-अकेले नहीं करेंगे। व्यावहारिक काम तो खैर एकसाथ मिल कर करेंगे ही, परन्तु आध्यात्मिक साधना भी एकसाथ करेंगे।

ग्रामदान में हम यही कहते हैं। जमीन की मालकियत सबकी होनी चाहिए। 'मेरी जमीन', 'मेरी जमीन', ऐसा मत कहो, "हमारी जमीन", "हमारी जमीन", ऐसा कहो। कोई मालिक नहीं। भगवान् के होते हुए हम मालिक बनेंगे, तो हम भगवान् के द्रोही बनेंगे, यह भक्ति नहीं होगी। सबको पहले, बाद में मैं, यह मातृवात्सल्य की भावना जब हर एक में आयेगी, तभी हम सच्चे भक्त बनेंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि ग्रामदान से मालकियत मिट जायगी, तो कैसे चलेगा? मरने के बाद जमीन यहाँ छोड़ कर चले जाते हो और तुम मालिक कहाँ के? यह तुम्हारा भ्रम है। तुम्हारी जमीन तुम्हारी नहीं है, सारे गाँव की है। अगर हमारे पड़ोसी के घर में सब लोग मर गये और सिर्फ बैल बचा है, तो हम उस बैल का उपयोग करते हैं, वह बैल तो काम का है और बच्चा क्या कोई काम का नहीं है? इस तरह सारे गाँव के बच्चों की तालीम, पोषण का इंतजाम करना, इसका नाम ग्रामदान है।

(आचमपट्टी, मदुरा, १८-३) ——

श्रीमानों को श्रमवान बनाना है

कम्युनिस्ट लोग हमें कहते हैं कि श्रीमानों से छीनना पड़ेगा। हम उनको कहते हैं कि अरे, उनके पास है क्या लेने लायक कि तुम उनसे छीनने की बात करते हो? उनके पास खाने-पीने की कोई चीज नहीं है! सिर्फ कागज के टुकड़े, लाल-पीले पत्थर और हीरे-मोती हैं! उसके सिवा "लक्ष्मी" तो उनके पास है ही नहीं, इसलिए उनका मत्सर करने की बात नहीं, उनका कुछ भी छीनने की बात नहीं है। उनके पास जो कुछ है, उनका मूल्य बदलने की बात है। जहाँ मूल्य बदल जायेंगे, वहाँ वे खत्म हो ही जायेंगे। फिर आज के बड़े-बड़े श्रीमान् बाबा के पास दरिद्री बन कर जमीन माँगने आयेंगे। बाबा उनको भी जमीन देगा। जब श्रीमान् श्रमवान बनेगा, तब हम उसकी रक्षा करेंगे। हमारा धंधा श्रीमानों का मत्सर करना नहीं है, हम उनको श्रमिक बना कर श्रम की प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहते हैं।

(पापानायकनपट्टी, मदुरा, १९-३) —विनोबा

www.vinoba.in

क्रांति-तीर्थ कोरापुट और क्रांति की अनोखी प्रक्रिया ! : २.

(दादा धर्माधिकारी)

यह किसानों की क्रांति है, इसलिए यह बिलकुल दूसरी तरह की है। किसानों और मजदूरों में क्या फर्क है, यह भी यहाँ बता दूँ।

कारखानों में दो विशेषताएँ होती हैं : पहली यह कि वहाँ मजदूर ज्यादा और मालिक कम होते हैं। दूसरी विशेषता यह कि वहाँ मजदूर काम करते हैं, परंतु वह उनका अपना काम नहीं होता । जहाँ दूसरे का काम होता है, वहाँ काम बंद कर देना क्रांति का बड़ा भारी औजार है । इसलिए मजदूर की क्रांति में हड़ताल एक बहुत बड़ा हथियार था।

किसानों की हड़ताल नहीं होती !

एक दफा हमारी महराजिन ने कह दिया कि हम आज रोटी बनाने नहीं आयेंगी ! पचीस मेहमान आ गये थे। हमारा बेटा कहने लगा कि अगर तुम रोटी पकाने नहीं आओगी, तो तुम्हारी तनख्वाह काट लेंगे । तब लड़के की माँ कहने लगी, उसकी तनख्वाह काटने से रोटी थोड़ी ही पकेगी। मैंने कहा, "तो अब क्या होगा ?" वह कहने लगी, "मैं खुद आज रोटी बनाऊँगी।" तो, जहाँ दूसरे का काम होता है, वहाँ हड़ताल हो सकती है। जहाँ अपना काम होता है, वहाँ हड़ताल नहीं हो सकती। आज तक दुनिया में किसानों की हड़ताल नहीं हुई, क्योंकि किसान अपना काम करता है। मजदूर की क्रांति की प्रक्रिया और किसान की क्रांति की प्रक्रिया एक नहीं हो सकती । जहाँ मालिक थोड़े और मजदूर ज्यादा हों, वहाँ क्रांति आसान है, लेकिन खेती में मजदूर कम, बड़े मालिक कम और छोटे मालिक ज्यादा, ऐसा ही होता है। अब इन छोटे मालिकों की मालकियत कौन छीने ? वोट छोटे मालिकों के हाथ में हैं। संख्या छोटे मालिकों की ज्यादा है। बड़े मालिकों के खिलाफ छोटे मालिक उठ खड़े हों, तो वे मालकियत छीन सकते हैं। दामोदर अगर मुझसे आकर कहे कि 'चलो, बिरला की संपत्ति छीनें, तो हम दोनों वह छीन सकते हैं। मैं उस काम में जरूर शामिल हो सकता हूँ ! लेकिन वह अगर कहे कि "दादा, तुम्हारा मकान भी मैं छीनूँगा," तो मैं कहूँगा कि "भाई, मैं बिरला थोड़ा ही हूँ !" छोटे मालिक सौ में सत्तर हैं । उनकी मालकियत छीनने की ताकत इस संख्या में नहीं है। यह हिंसा-अहिंसा का या गांधी-विनोबा का सवाल नहीं है। यह तो शुद्ध व्यवहार का सवाल है। क्या छोटे मालिक अपने खिलाफ कानून बना लेंगे ? लोग पूछते हैं कि कानून से मालकियत क्यों नहीं मिटाते ? पर अपने खिलाफ कानून बनाना याने अपने को बेवकूफ ही सिद्ध करना होगा। दूसरे लोग पूछते हैं कि लोग दान कैसे देंगे ? मैं उनसे पूछता हूँ कि लोग अपने खिलाफ कानून कैसे बनायेंगे ? अगर अपने खिलाफ कानून बनाना आसान है, तो दान देना उससे भी आसान है। इसलिए कानून की जो बात करते हैं, वे गंधर्व-नगरी में ही रहते हैं।

छोटी मालकियत से भी खतरा

एक दफा मैं दक्षिण की यात्रा में जा रहा था। हमारी बहन कहने लगी कि तुम अकेले जा रहे हो, किसीको साथ ले लो, क्योंकि यह फर्स्ट क्लास का डिब्बा है। लोग समझते हैं कि इसमें अमीर लोग प्रवास करते हैं। वे लोग तुम्हारे रुपये छीन लेंगे। साथ में दामोदर को ले जाओ। फर्स्ट क्लास में जाना था, इसलिए सौ-दो सौ रुपये तो साथ में रखने ही पड़ते हैं। परंतु मैं बहुत चालाक आदमी हूँ ! पैसा बहुत चालाकी सिखाता है। मैंने दामोदर को पूछा, "तुम्हारे पास कुछ रुपये तो नहीं हैं ?"

दामोदर कहता है, "टिकट है और उधर से वापस आने के लिए पाँच रुपये भी साथ में रखे हैं।"

मैंने कहा, "रास्ता बड़ा लंबा है और एकान्त है। इसलिए पैसा जरा सँभालना, नहीं तो कोई छीन लेगा।"

हो गया मेरा काम ! दामोदर पाँच रुपये की चिंता में रात भर जागता बैठा रहा और मैं हजार रुपये जेब में रख कर खुर्राटे लेने लगा। छोटी मालकियत ऐसी ही युक्ति है, जो पूँजीवाद में बड़ी मालकियत के संरक्षण के लिए बनायी गयी है। गांधीजी ने हमसे कहा, 'हथियारवालों से लड़ना है, तो हथियार छोड़ दो। यहाँ के लोग पूछते थे कि अंग्रेजों के पास तलवार, बन्दूक, लाठी है; उनके साथ कैसे लड़ेंगे ? वह बूढ़ा बोला, "मेरी बात सुनोगे, तो मैं एक युक्ति बताता हूँ। इन हथियारों का डर छोड़ दो, तो सब हथियार बेकार हो गये ! फिर तो दादा धर्माधिकारी भी सिपाही होगा और विनोबा भी, जो फूँक मार कर हवा में उड़ाया जा सकता है ! विनोबा पहला सत्याग्रही हुआ भी, क्योंकि उसने जड़ पकड़ ली थी। जो हथियार नहीं रखता, उसके सामने हथियार बेकार है।

विनोबा कहता है कि अगर मालकियत और मिल्कियत को खत्म करना चाहते हो, तो मैं दूसरी युक्ति बताता हूँ। हथियार का डर छोड़ दो, हथियार बेकार ! मालकियत का लोभ छोड़ दो, मालकियत बेकार ! बारडोली के किसानों ने हथियार का डर छोड़ा और वह हमारे देश का सत्याग्रह का रणक्षेत्र बन गया। कोरापुट के मालिकों ने मालकियत का लोभ छोड़ा और वह हमारे देश की आर्थिक क्रांति का सत्याग्रही पुण्यक्षेत्र बन गया। मैंने आपसे कहा कि यह मनुष्यता का पुण्यक्षेत्र है। मनुष्य और दूसरे जानवरों में क्या फर्क है ? अब तक अर्थशास्त्र बताया, अब थोड़ा विज्ञान भी बता दूँ।

विज्ञान की दृष्टि

एक बाप अपने बेटे को सिखा रहा था कि 'सारे मनुष्य बंदर से पैदा हुए हैं।' बेटा पूछने लगा, 'सभी ?' उसने दो दफा पूछा, तीन दफा, चार दफा पूछा। बाप ने कहा, "हाँ, हाँ, विज्ञान की किताब में जो लिखा है, सही है।"

लड़का, "तो क्या मैं भी बंदर से ही पैदा हुआ हूँ ?"

बाप, "अरे ! तू नहीं ! तेरे बाप-दादे बंदर से पैदा हुए थे।"

विज्ञान की तरफ देखने का भी मनुष्य का एक तरीका होता है । "Science is neutral. Capitalists harnessed it for profit and power and politicians for war."–विज्ञान पक्षपात-रहित है। पूँजीपतियों ने उसे व्यक्तिगत स्वार्थ और सत्ता के लिए जोत लिया तथा राजनीतिज्ञों ने युद्धकार्य में। गांधी और विनोबा कहते हैं, विज्ञान को हम मनुष्य में प्रेम बढ़ाने के लिए जोतेंगे।

मनुष्य और प्राणी में सबसे बड़ा फर्क यह है कि दूसरे प्राणियों में बूढ़े-बीमार और कमजोर नेता हो ही नहीं सकते। शेरों का नेता कभी कमजोर शेर नहीं होगा। साँड़, भैंसे आदि के नेता कभी कमजोर नहीं होते; लेकिन मनुष्य में बूढ़ा चर्चिल नेता होता है, फ्रैंकलीन रूजवेल्ट जैसा (लूला-लँगड़ा) भी नेता होता है। गांधी, नेहरू, डांगे, जे. पी., राममनोहर, श्यामबाबू मुकर्जी आदि भी नेता हो सकते हैं, होते हैं ! असल में होना तो यह चाहिए कि किंगकाँग, गामा पहलवान आदि हमारे नेता हों, परंतु ऐसा नहीं होता। क्योंकि विज्ञान हमको सिखाता है कि मनुष्य की ताकत उसके शरीर में नहीं है, उसके दिल में है। चीन की क्रांति में चाँग-काई-शेक का कब्जा आधे चीन पर था। अमेरिका उसकी सहायता के लिए मौजूद था। कानून उसके पक्ष में था। सेना उसकी बड़ी थी। फिर भी माओ के कम्युनिस्ट सिपाहियों ने उसको हरा दिया, क्योंकि उसके हथियारों के पीछे दिल भी नहीं था, दिमाग भी नहीं। फ्रांस और डच लोगों की सेनाओं को छोटे-छोटे देशों ने हरा दिया, क्योंकि वहाँ के कम्युनिस्ट नेताओं के दिमाग में विचार था, दिल में भावना थी। हथियार उनके पास कम थे। विनोबा कहता है कि दिमाग में विचार और दिल में निष्ठा परिपूर्ण हो, तो परमेश्वर के हथियार से ही मनुष्य विजयी होता है।

विनोबा की यह क्रांति ऐतिहासिक और वैज्ञानिक भी है। ग्रामीकरण इस क्रांति का सबसे बड़ा शिखर है, क्योंकि ग्रामीकरण कहता है कि जमीन बाँट लो। "बाँट लो" का मतलब है, "मिला लो।" बाँटने का अर्थ टुकड़े करना नहीं है, "टुकड़े मिलाओ", यही उसका मतलब है। छोटे-छोटे टुकड़े मिले, तो एक साबित रोटी बन गयी। यह ग्रामीकरण गोल रोटी की तरह ही समूचा और पूरा है।

एक पदयात्रा में हम एक गाँव में पहुँचे, तो गाँव का एक आदमी कहने लगा : "आज आपकी सभा में कोई नहीं आयेगा, क्योंकि एक आदमी मर गया है।"

मैंने कहा, "एक आदमी मर गया है, लेकिन बाकी के तो जिन्दे हैं न ?" उसने कहा: "लेकिन फिर भी कोई नहीं आयेगा, क्योंकि उसके शोक में सब शामिल हैं !" चार रोज के बाद दूसरे गाँव में गये। वहाँ भी हमसे कहा गया कि सभा नहीं होगी, क्योंकि गाँव में एक लड़के की शादी है, जिसमें सब लोगों को शामिल होना है। गाँवों ने हमें जो सिखाया, वह शहरों ने कभी नहीं सिखाया। शहरवालों से पूछा कि कितने आदमी मरे, तो कहेंगे, "साढ़े तीन फीसदी !"

"अरे भाई, तीन मरे या चार मरे, यह समझ सकते हैं, लेकिन साढ़े तीन कैसे मर सकते हैं ?"

"अरे ! यह तो हिसाब है !"

www.vinoba.in

एक स्त्री का पति मर गया वह। कहने लगी, "साढ़े तीन फीसदी मरे या नहीं, यह मैं नहीं जानती, लेकिन मेरे पति तो सौ फीसदी मर गये हैं यह साफ है! बाबूजी, उनके लिए वह आँकड़ा है, परंतु मेरे लिए वह मेरा प्राणेश्वर था, मेरे मकान का वह चिराग था, मेरा सर्वस्व था!" शहरों में मनुष्य गुमनाम हो जाता है। देहात में "किसका लड़का फेल हुआ?" तो "दादा का।" किसका लड़का पास हुआ?" तो "दामोदर का।"

दामोदर कहता है कि "मैं मिठाई नहीं बाँटूँगा, क्योंकि दादा का लड़का फेल हुआ, तो मेरा ही लड़का फेल हुआ!" दादा कहता है, "दामोदर का लड़का पास हुआ, तो मेरा ही लड़का पास हुआ। मिठाई मैं बाँटूंगा।"

यही ग्रामराज्य कहलाता है। इसमें लेन-देन नहीं है, देन ही देन है। शादी में शामिल, मौत में शामिल! बिनोबा कहता है कि "तुम काम में भी शामिल हो, आराम में भी शामिल हो। काम भी बाँट लो, आराम भी बाँट लो, मेहनत भी बाँट लो और मालकियत भी बाँट लो। यह नकलनवीसों की क्रांति नहीं है, यह भारतवर्ष के इन्सानों की क्रांति है।

पुराने जमाने में लोग कहते थे कि क्रांति या तो एक महात्मा, राजा या वीर पुरुष करता है। मार्क्स आया और उसने सिखाया कि क्रांति राजा, वीर पुरुष या महात्मा नहीं करते हैं, क्रांति तो श्रमजीवी करेगा। विनोबा कहता है कि वह विभूति मेरे देश का किसान होगा। इसलिए मैंने आपसे कहा कि इस क्रांति में सबकी क्रांतियों से लाभ लेकर हम संपन्न हुए हैं, पर हमने नकल किसीकी नहीं की है। नकलनवीस तो पढ़े-लिखे लोग होते हैं, जो शास्त्री होते हैं। शास्त्र की किताब में जो नहीं होगा, वह उनके दिमाग में भी नहीं होगा। मेरे बीमार बेटे को प्यास लगी। डॉक्टर से पूछा, तो डॉक्टर ने कहा, "इस बीमारी के लक्षणों में प्यास लगना लिखा ही नहीं है!"

"लेकिन प्यास लग रही है, उसका क्या कारण?"

"वह गलत प्यास है, क्योंकि किताब में वह लिखा ही नहीं है!"

पढ़े-लिखों का डर!

एक दामाद अपने ससुराल में गया। थोड़ा अंग्रेजी पढ़ना-लिखना जानता था। अंग्रेजी में पढ़ने की लिपि और लिखने की लिपि अलग होती है। वह दामाद सिर्फ बड़ी लिपि ही पढ़ना-लिखना जानता था। उस वक्त ससुराल में संयोग से छोटे अक्षरों में एक अंग्रेजी पत्र आ गया। वह बेचारा उसे कुछ समझ नहीं पा रहा था, तो आखिर रोने लगा। सास ने देखा, तो उसको लगा कि चिट्ठी में जरूर कुछ बुरी खबर है! वह भी साथ-साथ रोने लगी। इतने में पत्नी आयी। उसने देखा कि माँ रो रही है, तो जरूर कुछ हुआ होगा! वह भी रोने लगी! अड़ोस-पड़ोस की स्त्रियों ने यह देखा, तो वे भी रोने में शामिल हो गयीं। वहाँ से दामोदर जा रहा था। वह पूछने लगा कि आप लोग क्यों रोते हैं? बहनों ने कहा: "ये लोग रोते थे, तो पड़ोसी-धर्म के कारण हम भी रोने लगे।" सास को पूछा, तो कहने लगी कि "दामाद रोता था, इसलिए हम भी रोने लगीं।" आखिर दामाद बाबू को पूछा, तो जवाब मिला, "यह छोटी लिपि में चिट्ठी आ गयी, इसलिए मैं रो रहा हूँ!" इस तरह पढ़ा-लिखा आदमी विचार से डरता है!

यह क्रांति रूस-चीन की क्रांति नहीं है, यह तो छोटी लिपि की क्रांति है। दुनिया के दूसरे देशों के लोग कह रहे हैं कि दुनिया के इतिहास में कभी हुई नहीं ऐसी क्रांति भारत में हो रही है। मालकियत के लोभ को विनोबा मिटा रहा है। उसने निहत्थे और भूखे लोगों में एक शक्ति पैदा की और उनको क्रांति का साधन बना दिया। अंग्रेज भारत छोड़ कर न जाते, तो भी गांधी सफल हो चुका था; क्योंकि उसने निहत्थे लोगों को यह सिखा दिया कि तुम भी मुकाबला कर सकते हो और देश में क्रांति हो सकती है। १९३१ में गांधीजी ने जब असहकार का आंदोलन शुरू किया, एक अंग्रेज लॉर्ड ने कहा था कि "It is most foolish of all fools".—यह मूर्खता पर मात कर देने वाली मूर्खता है। १९३१ के दिसम्बर में बम्बई के गवर्नर जॉर्ज लॉइड ने कहा था: "Gandhi is within two inches of success!"—गांधीजी के हाथ तो यश के आसमान को करीब छू गये। क्योंकि मैं और आप गांधी के साथ नहीं थे! गांधी तो सफल हो चुका था, असफलता तो आपकी और मेरी थी।

उज्ज्वल असफलताएँ

विनोबा '५७ के पहले ही सफल हो चुका है। कोरापुट के लोगो! इस विनोबा का नाम क्या पाँच साल पहले आप जानते थे? किसी म्युनिसिपैलिटी में उसका चित्र भी दीख पड़ता है? पान-बीड़ी की थैली पर जे.पी., अरुणा आसफअली, अच्युत पटवर्धन, गांधी या नेताजी बोस के साथ कभी इसका भी नाम आपने पढ़ा था? पाँच साल पहले जिसको कोई भी नहीं जानता था, उसको देखने के लिए अमेरिका, चीन, रूस, जापान आदि देश के लोग आते हैं। विनोबा तो सफल हो चुका है। अब असफलता होगी, तो वह आपकी और हमारी होगी। मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि जिसका असफलता से मुकाबला नहीं होता, वह कभी क्रांति नहीं कर सकता। हमें तैयारी सफलता के लिए करनी चाहिए और तैयार असफलता के लिए रहना चाहिए। जटायु असफल हो गया, रावण सफल हुआ, परंतु नाम जटायु का लोग लेते हैं, रावण का नहीं। राणा प्रताप असफल हो गया, परंतु मुगलों का नाम कोई नहीं लेता। झाँसी की रानी असफल होकर मर गयी, पर नाम झाँसी की रानी का ही लेते हैं, अंग्रेज सरकार का नहीं। लोकमान्य तिलक, सुभाष बोस असफल हो गये, परंतु नाम उन्हींका लिया जाता है, माउन्टबेटन या अंग्रेजों का नहीं। इतिहास में ऐसी कुछ असफलताएँ हो गयीं, जो क्षुद्र असफलताओं से उज्ज्वल और उदात्त होती हैं। ताजमहल के ऊपर संगमरमर के पत्थर लगे हुए हैं, जिस पर सोने की और रत्नों की पच्चीकारी की गयी है। लेकिन यह सारी शोभा और शान उन पत्थरों के भरोसे है, जो ताजमहल की बुनियाद में पड़े हैं, जिनको कभी कोई नहीं देख सकता है।

कोरापुट-निवासियो! क्रांति वह करता है, जो बुनियादी पत्थर बनता है। आज जिसको सत्ता, संपत्ति और सम्मान का मोह नहीं, जो दुनिया में कीर्ति की अपेक्षा नहीं रखता है, अपनी कब्र पर भी जो अपना नाम लिखवाना न चाहता हो, अपने प्राणों को क्रांति-यज्ञ में समर्पण करने वाले उत्सर्गवान् लोगों की जरूरत है। ऐसे लोगों में से कोरापुट के लोग सबके आगे अग्रगण्य, पहली कतार में होंगे, यह हमारी अभिलाषा है। इस अभिलाषा को—इस प्रार्थना को—आपके चरणों में छोड़ता हूँ और आपको प्रणाम करता हूँ। (समाप्त)

भूदान की ओर विदेशियों का आकर्षण

(दामोदरदास मूदड़ा)

पिछले दिनों फेलोशिप ऑफ रिकन्सीलिएशन (एफ. ओ. आर.) का एक विशेष अधिवेशन हुआ था, जिसकी कार्रवाही उसके प्रधान मंत्री डॉ० जोश्वाने ने विनोबाजी की जानकारी के लिए भेजी। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं:

"फेलोशिप ऑफ् रीकन्सीलिएशन (भारत) के इस सम्मेलन का विश्वास है कि भारत के वर्तमान संदर्भ में ईसाई-गिरजाघर (सम्प्रदाय) समुन्नयन-कार्य में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योग दे सकते हैं।

"एफ. ओ. आर. (भारत) अपने सदस्यों और जिन गिरजाघरों में उनका विश्वास है, उन्हें प्रभु ईसा की यह तीव्र आकांक्षा कि 'वे सब एक हो जायँ,' और उनके ये शब्द कि 'आपके प्रेम से वे जान जायँ कि आप मेरे शिष्य हैं,' इन शब्दों का स्मरण दिलाना चाहता है। प्रभु के एवं परस्परों के प्रति यह प्रेमभाव गिरजाघरों में सहजस्फूर्त एकता की भावना निर्माण कर, अदालतबाजी का व्रण मिटायेगा और जायदाद या मिलकियत के प्रति एक नयी वृत्ति तथा न्यू टेस्टामेन्ट-'नये करार' को दृष्टि (Spirit) में अर्थ के समाजीकरण की सच्ची समूहभावना, जो चर्च के प्रारंभिक दिनों में प्रखरता से दीखती थी, बनायेगा।

"यह सम्मेलन एफ. ओ. आर. के सदस्यों से विशेषतया अपने-अपने क्षेत्रों में व्यक्ति-व्यक्ति और समुदाय-समुदाय में इस समुन्नयन-कार्य को चलाने के लिए आग्रह करता है।

"एफ. ओ. आर. अपने सदस्यों से प्रत्येक गिरजाघर को कोशिश करके इस तरह बनाने का आग्रह करता है कि उनका जीवन भाईचारे में परिणत हो जाय, जहाँ समाज की मालकियत हो, योजनाबद्ध उत्पादन हो और आवश्यकता के अनुसार वितरण रहे। वह यह भी सुझाता है कि एफ. ओ. आर. का प्रत्येक सदस्य आश्रम, भाईचारे के संगठन आदि संस्थाओं से जीवित सम्बन्ध रखे! विशेष रूप से अदालतबाजी को मिटा कर भिन्न सम्प्रदायों में मेल की भावना का कार्य करने के लिए उपसमितियाँ बनायी जायँ।

"सर्वोदय और खास करके भूदान भारत में अत्यधिक असरकार आन्दोलनों में से एक है, जिससे एक नया वातावरण निर्माण होगा और

www.vinoba.in

उससे आपसी ऐक्यभाव की महान् सामाजिक प्रक्रिया चालू होगी, इस विश्वास के साथ हम अपने सदस्यों तथा सत्य और प्रेम के सब उपासकों को इस आन्दोलन का अध्ययन कर उसे समझने और उसमें योग देने का आग्रह करते हैं।

"आज जो समग्र ग्रामदान की और वह भी सामूहिक (फिरका, तालुका के) रूप में मिलने की जो स्थिति आ रही है, उससे सम्पूर्ण सहयोगी जीवन सिद्ध हो सकेगा। हममें से हरएक को ऐसे सहयोग क्षेत्र में जाकर अपनी पूरी-पूरी मदद देनी होगी, जिससे जनकल्याणकारी समाज विकसित होकर हरएक की अर्थात् पूरे समाज की बुनियादी जरूरतें पूरी होंगी।

"हम गिरजाघरों से आग्रह करते हैं कि सर्वोदय-आन्दोलन को वे कारगर सहयोग दें और विशेषकर हम केरल के गिरजाघरों से विनय करते हैं कि विनोबाजी की केरल-यात्रा को वे सफल बनावें।

"भारत की शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण की नीति की सराहना करते हुए यह सम्मेलन स्कूल और कालेजों में सैनिक शिक्षा का जो राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम चलाया जा रहा है, उसके प्रति चिन्ता प्रकट करता है। यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि नैशनल तथा ऑक्सिलियरी कैडेट कोर की अपेक्षा वे शान्ति-सेना स्काउट और गाइड मूवमेंट (बाल-बालिका चर-आन्दोलन) जैसे असैनिक संगठन बना कर चारित्र्य और अनुशासन निर्माण करें तथा सर्वोदय-समाज के सदस्यों के लिए सेवाभावना निर्माण करे।

"अन्त में सर्वोदय-आन्दोलन की वर्गविहीन समाजरचना तथा नयी तालीम के कार्यक्रम को जागतिक महत्त्व है, इस विश्वास से हम अन्य देशों के अपने भाइयों एवं बहनों से आग्रह करते हैं कि वे संपूर्ण एकात्मता और मेल के जागतिक महान् आन्दोलन का अध्ययन करें। उसके परिणामों पर विचार करें तथा उपरोक्त तरीकों से कार्य करें।"

एफ्र. ओ.आर. की केरल-शाखा के श्री चंडी तथा उनके साथी अरसे से भूदान-आंदोलन में क्रियात्मक सहयोग दे रहे हैं और अब तो विनोबाजी की पदयात्रा के निमित्त भू-क्रांति को सफल बनाने में वे जुट भी गये हैं।

उसी तरह कुछ हिंदू-मठाधिपति भी धीरे-धीरे भूदान-यज्ञ के धर्मविचार से आकृष्ट होकर इस ओर झुके हैं। इधर दक्षिण के स्वामी कुंड्रकुड़िजी ने भी ऐसी ही आदर्श मिसाल पेश की है। स्वामीजी का मठ रामनाद जिले में है। छोटी-मोटी अड़तालीस उसकी शाखाएँ हैं। अनाथालय, विद्यालय, महिलाश्रम आदि संस्थाएँ भी संचालित की जा रही हैं। मठ की सत्तर एकड़ जमीन भूदान में दी है। जब से भूदान का काम चला है, स्वामीजी अपने बस का पूरा सहयोग देते आये हैं। उस दिन विनोबा से स्वामीजी कहने लगे—"मैंने अब तक मठ के द्वारा भक्ति का प्रचार करने का प्रयत्न किया। परंतु मेरा अनुभव यही है कि भूखी जनता को जीवन-निर्वाह का साधन दिये बिना उसमें भक्ति की प्रेरणा जाग्रत होना कठिन है।"

कोरापुट में एक साल का खेती का अनुभव : २.

(गोविन्द रेड्डी)

धान की फसल पानी पर अवलंबित होती है, इसलिए हमेशा पानी पर कंट्रोल (नियंत्रण) रखना आवश्यक है, तभी पानी का तापमान काबू में रख सकते हैं। पौधा लगाने के बाद पानी का तापमान ९५° तक हो, धीरे-धीरे दो मास में ७४° आवे। इसलिए धान में हमेशा आधा इंच पानी हो। यदि बड़ा प्लॉट हो, तो उपरोक्त तापमान कंट्रोल में रखना अशक्य है, इसलिए छोटा प्लॉट होने से सब क्रियाएँ सहज हो सकती हैं। इससे पैदावार में वृद्धि होना लाजिमी है।

धान के रोप लगाने के बाद ३० दिन में पानी निकालना चाहिए, जिससे फसल में वृद्धि २० फी सदी होगी। २० दिन के बाद पानी निकालने से १० फीसदी वृद्धि होगी। बिलकुल ही पानी न निकालने से ५ फीसदी वृद्धि होगी। इसलिए बड़ा प्लॉट हो, तो एक दिन में पानी निकालना अशक्य है, छोटा प्लॉट हो, तो एक दिन में पानी सहज निकाल सकते हैं।

धान की बाढ़ अधिक होने से वह अक्सर गिर जाता है। बड़ा प्लॉट हो, तो गिरने वाली फसल को रोकना अशक्य है। इसलिए छोटा प्लॉट हो, तो हर दस फुट पर रस्सी बाँध कर गिरने वाली फसल को रोक सकते हैं।

बड़ा प्लॉट होने से लाइन सीधी नहीं होती। तब सूर्य-किरणें जड़ों तक पहुँच नहीं पातीं। इसलिए छोटा प्लॉट होने से लाइनें सीधी होंगी और पूर्व-पश्चिम लाइन होने से सूर्य-किरणें एक महीने में जड़ों तक पहुँच जायेंगी, जिससे फसल-वृद्धि में मदद मिलेगी और फसल निरोगी रहेगी।

बड़ा प्लॉट होने से बरसात का पानी एक प्लॉट से दूसरे में, दूसरे से तीसरे में, इस प्रकार बहता जायगा, जिससे पानी का तापमान काबू में रखना अशक्य है। इसलिए छोटा प्लॉट बना कर पानी के निकास के लिए प्रति प्लॉट के लिए मिट्टी की नाली बना कर बरसात का पानी छोड़ने से, जमीन का सत्त्व नहीं जायगा।

१३५ एकड़ काश्त की जमीन है, जिसमें ३० एकड़ धान की है। इसमें कम-से-कम १०० और अधिक से अधिक १७५ मन धान होता है। इस साल ४५० मन धान हुआ। ४०० रु० वापस लेने की शर्त से काश्त करने में मदद दी और २००० रु० के बैल। सबसे महत्त्व की बात यह कि निंदाई की तरफ विशेष ध्यान दिया, तब इस साल २७५ मन धान अधिक हुआ। बाँध के नीचे सिर्फ ३ एकड़ सिंचाई की। बाकी जमीन बरसात पर अवलंबित थी। इस साल ६१"-१३ सेंट पानी हुआ। १ जुलाई '५६ के दिन ८"-२२ सेंट पानी हुआ, जिससे धान के रोपों को भारी क्षति पहुँची। हर फसल का नमूना दो एकड़ का कराया था।

पहले पहल गाँव के चारों तरफ कूड़ा-कचरा जहाँ-तहाँ रहता था और गोबर भी इधर-उधर फेंकते थे। खाद की कदर बिलकुल नहीं थी। गाँव की लक्ष्मी का महत्त्व और सफाई का भान कराया। हर घर के पास खाद के लिए गड्ढे कराये। अब सब लोग खाद बनाते हैं। पाखानों का प्रबंध नहीं किया है, तो भी गाँव की चारों तरफ मैले का दर्शन नहीं होता है। सब लोग दूर जाते हैं।

गाँव की रचना और सड़क

गाँव में पंक्तिरहित घर थे। सब हटा दिये। अब गाँव में दो ही पंक्तियों में सारे घर हैं। दोनों पंक्तियों के बीच ६०' जगह है। अपने-अपने घर के पीछे ५०' दूरी पर जानवर बाँधने का कोठा एक-एक कतार में है। खेत में आने-जाने की सड़क नहीं थी। अब सब खेतों में आने-जाने की सड़कें बन गयी हैं।

पहले पहल हर काम में रुकावट थी। ७५ प्रतिशत शराबी थे। छह बार जमीन गाँववालों ने बाँटी, छहों दफा उन्होंने ही नामंजूर भी की। आखिर अपनी तरफ से १० महीने के बाद जमीन बाँटी गयी। नयी चकबंदी में एक ही दोष रहा है। जमीन की उन्नति के अलावा कला पर विशेष ध्यान दिया गया है। अज्ञानी लोगों के जरिये कला का निर्माण कैसा हो सकता है, इसका यह नमूना है। एक दफा अनाज देते समय कम माप वाली पायली देखने में आयी, तो उसे फुड़वाया। गाँव में सूचना दिलवायी कि सब लोग बड़े-छोटे सब प्रकार के माप जमा करें। ५ मिनट में करीबन् ५० से ज्यादा माप इकट्ठे हुए। तब सोचा, यह करामात कैसे हुई? नित्य-निरंतर उनके संपर्क में रहने का यह फल था। अब शराब-बंदी में सौ प्रतिशत सफलता मिली है। बच्चों को रात में तेलुगु सिखायी जाती है। ९० प्रतिशत लोगों की बीड़ी बंद हुई है। कताई आरंभ हुई है। बहनें खुलेआम बीड़ी पीती घूमती थीं। अब घर तक मर्यादित हुआ है। जहाँ-जहाँ संपर्क आया, उस समय कोई भी एक विषय की शिक्षा बड़ों को दी जाती है, जैसे खेती, खगोल, बरसात, गाँव, जिला, देश, विदेश, नेता आदि।

अब खेत, घर, जानवर बाँधने के कोठे, खाद के गड्ढे और सड़कें; सब एक पंक्ति में हैं। गाँव के ३१ परिवार सहजीवन की ओर अग्रसर हैं। ऐसा ही काम सन् '५७ में और ७ गाँवों में करने का प्रयत्न चल रहा है। इस नवनिर्माण-कार्य में कोई भी आना चाहें, तो कम-से-कम ३ साल की तैयारी से आवें। निर्माण-कार्य में कृषि मुख्य विषय है। यहाँ की भाषा तेलुगु है। कृषि हाथ से करनी है। (समाप्त)

हम चाहते हैं कि दुनिया का यह संकट टले, दुनिया परमेश्वर का धाम बने, तो हम सभी श्रद्धावान् लोगों को इकट्ठा हो जाना चाहिए। हमको कहने में खुशी होती है कि भूदान, ग्रामदान और सर्वोदय; ऐसा कार्यक्रम बन गया है कि उस मोर्चे पर सारे धार्मिक और श्रद्धालु लोग इकट्ठा हो सकते हैं। सब धर्म ईश्वर की भक्ति पर जोर देते हैं और उसके नाम-स्मरण की महिमा गाते हैं, लेकिन उसके नाम-स्मरण से भी ज्यादा महत्त्व वे करुणा और भूतदया को देते हैं। ईसा ने कहा कि "लॉर्ड-लॉर्ड" कहा करोगे, तो वही मेरी भक्ति है, ऐसी बात नहीं है। याने केवल मेरा नाम लेने वाले मेरे भक्त होंगे, ऐसा विश्वास नहीं है। परंतु जो मेरा काम करेंगे, दुःखितों की सेवा करेंगे, वे ही मेरे भक्त होंगे। ईश्वर की भक्ति वही करेगा, जो गरीबों और दुःखियों की सेवा करता है। वे ईश्वर का नाम न लेते हुए भी ईश्वर की भक्ति करते हैं।

—विनोबा

www.vinoba.in

साम्यवाद से साम्ययोग की ओर

(मदन मोहन मिश्र)

सन् सत्तावन में, सत्तावन सबडिवीजनों में सत्तावन शिविरों का आयोजन बिहार प्रांत ने किया। कैसा अनुप्रासमय शुभ संकल्प है ? सन् '५७ में विनोबाजी भूमि-क्रांति करना चाहते हैं—अर्थात् भूमि-हीनता मिटाने का कार्य। अतः बिहार ने तय किया है कि भूदान-आन्दोलन के जन्मदिन के सुअवसर पर यानी १८ अप्रैल तक भूदान में प्राप्त तथा सरकारी गैर-मजरुआ बाँटने लायक जमीन का वितरण हो जाय। इस हेतु शिविरों का आयोजन किया गया है, ताकि कार्यकर्ता व अन्य लोग वितरण की जानकारी हासिल कर सकें।

इन शिविरों का उद्घाटन सर्वोदय-विचार के कुछ प्रमुखों को सौंपा गया है। पटना-कमिश्नरी में विमला बहन घूम रही हैं। संयोग से इस यात्रा में साथ रहने का मुझे सुअवसर मिला।

यदा-कदा हृदय-परिवर्तन के बारे में अखबारों की कहानी और लोगों की जुबानी पढ़ा और सुना करता था। अन्तःकरण को कुछ अच्छा-सा लगता था, भाता था। पर भिलवारा नाम के गाँव में आँखों देखे हृदय-परिवर्तन का कुछ और ही दृश्य था, जिसका कुछ और ही अमिट-सा असर हुआ।

पाँच सौ आदमियों की उपस्थिति में विमला बहन का भाषण चल रहा था। ओजस्वीपूर्ण, चल-चित्र की तरह सिलसिलेवार सर्वोदय, भूदान-दर्शन रख रहीं थीं। बड़ा ही शान्त वातावरण था। भाषण के अन्त में कहा, "मैं भिलवारा के नागरिकों, छात्रों, शिक्षकों, रचनात्मक कार्यकर्ताओं एवं राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं से अपील करती हूँ कि '५७ की शुभ वेला में बिहार के संकल्प को सार्थक बनाने के लिए इस अहिंसक क्रांति में अपने समय की आहुति दें।" सन्नाटा छा गया!

कोई पैंतीस साल के एक युवक, रंग साँवला, कद मझोला मंच पर आये और बोले—"मैं भिलवारा गाँव का एक कम्युनिस्ट विचारधारा का कार्यकर्ता हूँ! आज इस गाँव में आदरणीय विमला बहन ने जो सर्वोदय का दर्शन और भूदान-यज्ञ-आंदोलन की प्रक्रिया हमारे सामने रखी, उससे हमारी आँखें खुल गयीं। मैं साफ देख रहा हूँ कि साम्यवाद और भूदान की विचारधारा में कोई अन्तर नहीं है। अगर यों कहा जाय कि भूदान साम्यवाद से एक सीढ़ी ऊपर है, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।" भाई श्री कमनिकान्त वहाँ के स्कूल के हेडमास्टर हैं। उन्होंने बिहार के संकल्प को सफल बनाने के लिए १८ अप्रैल तक के अपने पूरे समय का दान दिया और भविष्य के लिए आश्वासन भी।

संसार के अनेकों रूढ़ीवादी कर्तव्यों से ऊपर, आदमियत को मैं आदमी का सबसे बड़ा गुण मानता हूँ। भारतीयता, संस्कृति और समाज-रचना में साम्यवाद से अच्छा कोई और भी तरीका हो सकता है, यह मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

अनेकों व्यक्तित्व इन "वादों" के पीछे बलिदान हो रहे हैं, किन्तु हम लोग दोनों मुट्ठियों में राख को बटोरे, कोरे अभिमान से फूले, बैठे हुए हैं। मैं भी आज के समाज का एक प्राणी हूँ, अतः मुझ पर आँच न आये, यह भी असम्भव है। किन्तु रूढ़ियों और कुप्रथाओं से आन्तरिक विद्वेष रखते हुए भी, आदमी की अवमानना करूँ—ऐसा भी मैं नहीं। यदि मैं आदमियत के कर्तव्य से विमुख होऊँ, तो अवश्य ही दोषी हूँ।

इस दुनिया से परे का जीव हूँ—यह बात भी नहीं है। और लोगों की तरह मुझे भी नींद-भूख लगती है, मैं भी खाता-सोता हूँ। रुपया, आना, पाई की तथा ईंट और चूने की दीवालों की मुझे भी उतनी ही आवश्यकता होती है, जितनी और किसीको। यदि मैं भौतिक संसार अथवा स्थूल सत्य से इन्कार करूँ, तो मुझसे बड़ा झूठा और आत्म-प्रवंचक शायद ही कोई हो। बात केवल इतनी-सी है कि प्रयत्न करने पर भी मैं यह नहीं भूल पाता कि स्थूल सत्यों से निर्मित भौतिक संसार में ही संसार की सम्पूर्णता और सत्यता सीमित नहीं—उसके आगे भी बहुत कुछ है। उस "बहुत कुछ" की ओर से साधारण दुनियादार आदमी एक प्रकार से आँखें मूँदे रहता है। उसे इतना अवकाश ही नहीं रहता कि उस अप्रतिम सौन्दर्यमयी तथा असाधारण ग्रामराज्य की वास्तविकता की ओर आँख उठा कर भी देखे।

किन्तु मैं—मैं आज अपने आपको इसमें समर्थ पाता हूँ। विमला बहन का उपकार मानता हूँ कि उन्होंने बता दिया कि पथिक को मार्ग की सुन्दरता देख कर विचलित नहीं हो जाना चाहिए, वरन् मंजिल का ध्यान पहले रखना चाहिए।

भूमि की समस्या तो किसी-न-किसी तरह हल होने वाली ही है; क्योंकि वह जमाने की माँग है, शोषित वर्ग का इन्कलाब है। परन्तु लोगों के मन में परिवर्तन करने की शक्ति दूसरी किसी प्रक्रिया में नहीं है। भूदान-यज्ञ-आंदोलन ने इस देश के सभी पक्षों को जनता के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित करने का सुअवसर दिया है। जो समय से लाभ नहीं उठा सकेगा, वह नादान साबित होगा।

"मैं अपनी जमीन का छठा हिस्सा और बिहार प्रांत के संकल्प को सार्थक बनाने के लिए १८ अप्रैल तक का पूरा समय देता हूँ और आश्वासन दिलाता हूँ। इस छोटे से गाँव की ओर से, अपने नवयुवक भाइयों की ओर से कि अब हमारा हर कदम ग्रामदान—ग्रामराज्य की ओर बढ़ेगा।"—भाई विश्वनाथ सिंह ने जनता के सामने ये विचार रखे। आप वहाँ के साम्यवादी दल के पुराने कार्यकर्ता हैं, वकील हैं, विचारक हैं। रंग गेहुँआ, पैंतीस साल के स्वस्थ नवयुवक हैं।

आदमी के अंतर का ताना-बना छुई-मुई से भी अधिक कोमल और अति विचित्र सूक्ष्म तन्तुओं से बुना होता है। अतः न जाने किस जगह से अंतर छू जाये, न जाने किस समय सारे तार झुनझुना उठें! ऐसी दशा में यदि कभी कोई अनहोनी-सी बात भी हो जाय, तो हमें चौंकना नहीं चाहिए।

गांधीजी की राह पर

(वल्लभस्वामी)

गांधीजी का श्राद्ध-दिन दस साल से सर्वत्र मनाया जाता है। 'श्राद्ध' शब्द से हम सब परिचित हैं। कुछ लोग पिंडदान भी किया करते हैं। लेकिन असल में श्राद्ध के मानी हैं, पूर्वजों के प्रति आदर का संकल्प दोहराना। बापू का हम स्मरण और आदर, दोनों करते हैं; क्योंकि हम चाहते हैं कि उनका जीवन-संदेश सर्वत्र फैले। हिंदुस्तान में मेलों और यात्राओं की कमी नहीं है। लेकिन गांधीजी की स्मृति में जो मेले होते हैं, वे दूसरी तरह के होते हैं। गांधीजी को हम ईश्वर नहीं, आदर्श पुरुष मान कर पूजते हैं। जिन आदर्शों की पूर्ति के लिए उन्होंने अपनी जिंदगी बितायी, उन आदर्शों का कुछ अंश भी तो हमारे जीवन में उतरे, यही गांधी-मेलों का अर्थ है। उसकी पूर्ति के लिए हमने सूतांजलि का एक मार्ग ग्रहण किया। बापू ने हमें दो मार्ग बताये : एक सत्याग्रह का प्रकार और दूसरा, चरखे का। गांधीजी के पहले दुनिया को यह यकीन ही नहीं होता था कि अहिंसा से कुछ हो सकता है। इतनी उनकी अहिंसा पर दृढ़ श्रद्धा थी। गांधीजी के कारण ही दुनिया को यह एहसास हुआ कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त आत्म-शक्ति ही सर्वश्रेष्ठ शक्ति है।

गांधीजी से चरखे के बारे में एक ने पूछा—"साथी, आप चरखा-चरखा तो कहते हैं; लेकिन आपके अनुयायी उसे सिर्फ खरीद कर रख लेते हैं। कहीं ऐसा न हो कि आपकी मृत्यु के बाद आपका दाह-संस्कार उन चरखों की लकड़ियों से ही वे न करें!"

उत्तर में गांधीजी ने कहा था, "मेरे मरने के बाद क्या होगा, मैं नहीं जानता, लेकिन एक चीज कह सकता हूँ कि चरखे से ही विश्वशांति हो सकेगी।"

आज दुनिया में सब चीजें केंद्रित हैं और हर फिलॉसफी और हर पद्धति प्रकारांतर से उसीको चाहती है। ऐसी हालत में गांधीजी ने विकेंद्रीकरण की चीज सामने रखी और बताया कि "दुनिया को अगर नाश में से बचना है, तो उसको विकेंद्रीकरण की ओर आना ही होगा।" स्पष्ट है कि चरखे के द्वारा ही यह विकेंद्रीकरण सध सकेगा। ग्रामोद्योग और ग्रामपंचायतें, यह उसका अमली रूप है। सूतांजलि की सीढ़ी से हमें वहाँ तक पहुँचना है।

गांधीजी ने सर्वोदय का विचार हम लोगों के सामने रखा। वे "Greatest good of the greatest number," याने अधिक से अधिक लोगों का अधिकतम भला, इसको कतई नहीं मानते थे। इसका अर्थ है, हमको सभी की भलाई का प्रयत्न करना चाहिए और सबका भला तो सिवा अहिंसा के हो ही नहीं सकता। गांधीजी ने अहिंसा का एक सामुदायिक और राजनीतिक प्रयोग हमारे सामने रखा। अब भूदान-यज्ञ द्वारा यह दूसरा प्रयोग, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में हो रहा है, जो सर्वोदय का ही मार्ग है। हम सबका कर्तव्य है कि गांधीजी के सर्वोदय को लाने में हम सब सहयोगी हों।*

---

* १२ फरवरी को तिरुनावाया (केरळ) में सर्वोदय-मेले का उद्घाटन-भाषण।

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

५ अप्रैल सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

हवा बनाने की कीमीया !

(वीनोबा)

जो मछली पानी में रह कर दूसरे प्राणीयों से बैर करेगी, वह मार खायेगी। वैसे ही जो लोग गांव के आसपास के लोगों के साथ झगड़ते ही रहेंगे, तो टीक नहीं सकेंगे। जमीन की मालकीयत अब टीकने वाली चीज नहीं है। हवा अुसके अनुकूल नहीं है। जाहीर है की जो लोग हवा के अनुकूल रहेंगे, वे टीकेंगे, बाकी के टीक नहीं सकेंगे। बाढ़ आती है, तो बड़े-बड़े पेड़ टूट जाते हैं और छोटा पौधा झुक जाता है, तो बच जाता है। जो नम्र होता है, वह बच जाता है। सारे राजा लोग झुक गये, तो आज भी वे कायम हैं। अगर वे नहीं झुकते, तो समूल अुखड़ जाते। आज अुनका राज्य नहीं है, परंतु अुनके जीवन का अींतजाम है।

भूदान के काम में भी सबका अींतजाम करना है। आज गांव की अलग-अलग मालकीयत बनी है। जमीन की मालकीयत अीसके आगे ही टीकने वाली चीज नहीं है। छह साल से हींदुस्तान में आवाज गूंज रही है की जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी सबके लीअे है, वैसे ही हवा भी सबके लीअे है। यह आवाज दबेगी नहीं। यह जमाने की मांग है।

अेक-अेक जमाने में अेक-अेक शब्द की प्रेरणा होती है। भारतीयार ने कहा था—"ओरु शोल्लु वेण्डुम"—अेक शब्द चाहीअे। शब्द में शकती होती है। जहां "वंदे मातरम्" शब्दोदय हुआ, वहां स्वराज्य होना लाजमी था। पाच-पचीस साल अुसके वास्ते मेहनत करनी पड़ी, परंतु जीस अंग्रेजी सल्तनत ने जमीन को खतम कर डाली, वह अीस शब्द के सामने टीक नहीं सकी, क्योंकी शस्तर नीकला!

सन् '४२ की बात! ९ अगस्त! हमको गीरफ्तार करने के लीअे सरकार में तय हो गया था। हम घर पर आ चुके थे। हमको मालूम हो गया, तो अेक मंदीर में हमने सभा शुरू की थी। हम जेल जा रहे थे, अीस वास्ते लोगों ने अपने लीअे आगे का कार्यक्रम पूछा, तो हमने अुनसे कहा—"भारत छोड़ो", यह मंत्र शुरू हुआ है। तुम हजारों लोग नीकल पड़ो और गांव-गांव जाकर 'अंग्रेज का राज्य गया, अंग्रेज का राज्य गया', बस यही सुनाओ। 'गया, गया, गया' कहा; तो बस गया ही। अेक शब्द ही काफी है। जो ताकत शब्द में होती है, वह शस्तर में नहीं होती।

पापानायकनपट्टी, मदुरा, १९-३-'५७

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी; ख = ख; संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से

सहयोगी समाज की राह पर

(विनोबा)

आज गाँव की जो पंचायतें होती हैं, वे भी किसीका खयाल नहीं करती हैं। जिसके पास जमीन, संपत्ति है, सरकार में कुछ वजन है, ऐसे लोग मेजॉरिटी से चुन कर आते हैं, उनके हाथ में सत्ता आ जाती है, तो वे गाँववालों को बराबर लूटते हैं। ग्रामदान की पंचायत तो पहले यह देखेगी कि गाँव में हरएक को खाना मिला कि नहीं? सबने खा लिया, तो उसके बाद वह खायेगी। यह अपनी पुरानी खानदानी है। घर में जो मुखिया होता था, वह सबको खिला कर ही खाता था। सिर्फ बच्चे नहीं, नौकर भी खा लें, उसके बाद वह खाता था। वह खानदानी आज हमने खो दी है। दरवाजा बंद करके खाने को बैठते हैं, ताकि किसीकी दृष्टि न पड़े। ऐसा छिपा कर खाना पड़ता है, क्योंकि मन में भावना है कि यह हम चोरी कर रहे हैं। ऋग्वेद में एक बहुत सुन्दर मंत्र है। "अन्ने समस्य यदासन् मनीषा:"-अन्न में सब लोगों की भावना रहती है। मनुष्य एक ग्रास भी जो खाता है, उस पर सब मनुष्यों की वासना चिपकी रहती है। इसलिए सबको खिला कर खाते हैं, तो वह हजम होता है, नहीं तो वह जहर हो जाता है। इसलिए कहावत है कि अन्न को दृष्टि नहीं लगनी चाहिए। किसीकी दृष्टि लगेगी, तो नुकसान होगा, क्योंकि हम ऐसी चीज खाते हैं, जो दूसरों को नहीं मिलती है। इसलिए वह दृष्टि अभिलाषा की दृष्टि है। माँ बच्चे को खिलाती है, बच्चा सामने बैठ कर खाता है, तो माँ की दृष्टि बच्चे को बाधक नहीं होती, क्योंकि माँ अपनी वासना उसमें नहीं रखती; बल्कि उसको वह अच्छा लगता है कि बच्चा खा रहा है। इसलिए हमारा जीवन अगर परोपकारी है, तो हमारा खाना आशीर्वाद-रूप है। लोगों की उस पर अमृत-दृष्टि पड़ेगी, परंतु आज तो दृष्टि न पड़े, इस डर से छिपा कर ही खाना पड़ता है। यह सब आज की दुनिया का लक्षण है। पुराने जमाने में तो "सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु।"—भगवान् सबको एकसाथ खिलाओ, पिलाओ, यही एक मंत्र था। कुरल में भी है कि "पातुर पहिरन्दू"—बाँट कर खाओ। इसलिए ग्रामदान की पंचायत सबको खिला कर खाने वाली, गाँव की सेवा करने वाली संस्था होगी।

ग्रामदान याने एक सहयोगी समाज बनेगा, सहयोगी संघ नहीं। उसमें तो जो इकट्ठे होते हैं, उनका अलग-अलग हक होता है। किसीने सौ रुपये दिये हैं, तो उसको सौ रुपये के मुताबिक नफा मिलेगा, पचास रुपये दिये हैं, तो पचास के मुताबिक नफा मिलेगा। परंतु ग्रामदान में तो सब समान बाँट कर खायेंगे। ग्रामदान में मालकियत ही मिट जायगी। सब "मैं-मेरा" छोड़ कर "हम-हमारा" कहेंगे, यही हमारे संतपुरुष कहते थे। परन्तु उन्होंने "मैं-मेरा" छोड़ने के वास्ते राह यह दिखायी कि परिवार छोड़ दो, घर का परित्याग करो। लोगों ने समझा कि यह तो हम कर नहीं सकेंगे, इसलिए वह बात नहीं बनी।

हम उसका दूसरा अर्थ करते हैं। "मैं-मेरा" छोड़ने का अर्थ है, "हम और हमारा" कहो। "मेरी जमीन" नहीं, 'हमारी जमीन' कहो—जैसे एक परिवार में कहते हैं। अब वह परिवार गाँव तक बढ़ाओ, तभी गाँव सुखी होगा।

एक भाई ने एक छपा हुआ पत्रक दिया, जिसमें लिखा था कि 'ग्रामदान मत करो, इसमें नुकसान है। बाबा की बातों में मत फँसो, वह तुमको ठगेगा। फिर तुम लोग पछताओगे। भूदान वाले धमका, डरा कर आपसे ग्रामदान करा लेंगे।'

आपने अभी हमारा व्याख्यान सुना। हमने आपको क्या डराया और क्या धमकाया? आप ही ने तो हमें खाना खिलाया! हम आपको क्या धमकायेंगे। हमें तो 'आप सुखी हों,' इतना ही कहना है। गाँव के बहुत थोड़े बच्चे ही स्कूल में जायँ और जो जायँ, वे भी रद्दी तालीम पायें, गाँव में गंदगी फैली रहे, गाँव पर कर्जा बना रहे, रोजमर्रा की चीजें खरीदने के लिए बहुत सारा अनाज बेचना पड़े, भूमिहीनों के बच्चों को पूरा खाना भी न मिलता हो, शहर की अदालतों में गाँव के झगड़े जायँ, बरबाद हों, चुनाव में जिसको चुना, वह कभी दुबारा मुँह भी न दिखाये; इन सारी बातों में अगर आपको सुख लगता हो, तो ठीक है। हम ग्रामदान का आग्रह नहीं करेंगे। परंतु अगर इन सब चीजों में से मुक्त होना चाहते हों, तो आप सब लोग मिलजुल कर काम करो, मालकियत मिटा दो और सारा गाँव एक बनाओ और वह भी हमारी बात जँचती हो, तो उस पर अमल करियेगा, न जँचती हो, तो मत करियेगा।

(आरसपट्टी व नट्टपट्टी, मदुराई, १०, १२-३)

लोकवाणी की पुकार

(लोचनदास मदन)

अभी तमिलनाड़ की पदयात्रा में पूज्य विनोबाजी के साथ तिरुवल्लुवर संत के इस कथन का मुझे बार-बार स्मरण होता रहा कि "जब तुम्हें असाधारण अवसर मिले, तो तुम हिचकिचाओ मत, बल्कि एकदम काम में जुट जाओ, फिर चाहे वह असंभव ही क्यों न हो।" दो हजार वर्ष पहले की यह सत्य वाणी आज सुअवसर मिलते ही तमिलनाड़ के उत्साही तथा बुद्धिशाली कार्यकर्ताओं के द्वारा तालुका-दान के संकल्प के रूप में दीप्तिवान हुई है। संत तिरुवल्लुवर के शब्दों में कहा जाय तो "समझदार आदमी पहले से ही जान जाता है कि क्या होने वाला है।"

बाबा की पदयात्रा में उपनिषदों में धर्म के तीन प्रतिपादित स्कंध-यज्ञ, अध्ययन और दान तथा इनके अतिरिक्त तप की महिमा (गीता में शारीरिक, वाचिक और मानसिक, इन तीन प्रकार के तपों का वर्णन है), इन चारों का दिग्दर्शन होता है और इन सबके भीतर भक्ति के मधुर रस का जो प्रवाह बहता है, उसमें तो परम-प्रेम परब्रह्म का नाद ही प्रतिध्वनित होता है।

आन्दोलन के बारे में समझाते हुए बाबा ने कहा: "सन् '५१ में जब भूदान शुरू हुआ, तब से आज हम बहुत आगे गये हैं। परंतु हम चाहते हैं कि आन्दोलन आगे बढ़ा है, तो उसमें व्यापकता के साथ अधिक शुद्धि आये। गंगा नदी जितनी गंगोत्री में शुद्ध है, उतनी कलकत्ता (हुगली) में नहीं है। हम चाहते हैं कि गंगोत्री की शुद्धि भी रहे और हुगली की विशालता भी रहे। हमारा आन्दोलन शुरुआत में जितना शुद्ध था, उतना ही आज भी होना चाहिए। इसलिए मैंने पलनी में निधि-मुक्ति और तंत्र-मुक्ति का प्रस्ताव रखा। '५७ में हम क्रांति करना चाहते हैं, तो हमने सोचा कि अगर आचार में क्रांति करनी है, तो विचार में भी कुछ क्रांति चाहिए। इसलिए इन दिनों हमारा चिंतन उसी पर चलता है। अभी वह पूरा नहीं हुआ है, फिर भी कुछ चिंतन हुआ है।

"आज तक हमारा आन्दोलन बड़े मालिक दें और हम लें, ऐसा था; याने आन्दोलन लेने वाला आंदोलन था। अब हम चाहते हैं कि यह आन्दोलन पूरा देने का आन्दोलन बने। संपत्तिदाता से हिस्सा लेने वाले हम कौन होते हैं? हम तो उससे कहें कि भाई, हमने अपना इतना-इतना दे दिया है या तो सर्वस्व-समाज को समर्पण किया है। तो जितनी उसकी ताकत होगी, उतना वह देगा। आज तक हम बड़े मालिकों से दान लेते थे। गरीबों से भी लेते थे, लेकिन यों कह कर कि उससे हवा तैयार होगी और फिर बड़े मालिक दे देंगे। आज हम कहते हैं कि सभी दें। अमीरों के पास देने के लिए जो चीज है, उससे बहुत बड़ी चीज देने के लिए गरीबों के पास है। अमीरों के पास भी कुछ है, परंतु उतना नहीं, जितना गरीबों के पास है। गरीबों के पास श्रम है। वे संकल्प करें कि आज तक हम अपना श्रम, जो अपने परिवार के लिए देते थे, गाँव के लिए वह पूरा समर्पण करेंगे। वैसा ही, सब लोग, जो कुछ पास में है, वह दे। देना है ईश्वर को, परंतु ईश्वर का मूर्त स्वरूप समाज है और समाज का प्रत्यक्ष स्वरूप गाँव है, इसलिए अपना सर्वस्व अपने गाँव को समर्पण करना है। आज तक हम अपने परिवार के लिए देते थे, अब हम गाँव के लिए दें। इससे परिवार मिट जायगा, ऐसा नहीं है। परिवार तो रहेगा ही, क्योंकि खेती परिवार ही करेगा। सहकारी पद्धति पर भी कुछ खेती हो सकती है।

"अब सिर्फ देने की ही बात है, लेने की नहीं है। इसलिए हम चाहते हैं कि हमारे कार्यकर्ता अपना सब कुछ समाज को समर्पण करें और फिर उससे प्रसाद-रूप जो मिले, उसको ग्रहण करें।"

शहरवालों के बारे में मैंने प्रश्न उपस्थित किया, तो बाबा ने कहा–"शहरवालों को कहेंगे कि तुम्हारे घर में दरिद्रनारायण का छठा प्रतिनिधि समाज है, उसका छठा हिस्सा दें। इससे ज्यादा वह दे सकते हैं, परंतु कम-से-कम वह छठा हिस्सा तो दें।"

हमारी सबसे बड़ी कमजोरी, सातत्य के अभाव की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, "जहाँ सातत्य-योग का अभाव है, वहाँ कार्यसिद्धि कैसे संभव हो सकती है? मंजिले-मकसद तक पहुँचने के लिए अपनी साधना चालू रखनी चाहिए। भूदान-यज्ञ एक साधन है और उसके जरिये साधना सतत जारी रहनी चाहिए, तभी फल दृष्टिगोचर होगा।"

हैदराबाद से अंधकारमय वातावरण की छाप लेकर मैं उनके पास पहुँचा था। पर यहाँ तो सब दलीलें बेकार साबित होती थीं और सबूत कमजोरी का ही देती थीं। बाबाके सांनिध्य में रहने से तो उल्लासमय भावना का ही परिचय हुआ। इसका उद्बोधन ऋग्वेद के इस मंत्र में प्रगट होता है: विश्वदानी सुमनसः स्याम, पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्। (ऋग्वेद ६।५२।५)–सदा प्रसन्न-चित्त रहते हुए हम उदीयमान सूर्य को देखें।

ग्रामदान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा, "महाराष्ट्र में जब कि मेरी गैर-मौजूदगी में ग्रामदान तथा फिरका-दान हो रहा है और तमिलनाड़ के ग्रामदान में तो पढ़े-लिखे और बुद्धिशाली लोग शामिल हैं—और तालुका-दान का भी संकल्प किया गया है, तो ऐसी सूरत में तैलंगाना में—तो अब जिला-दान होना चाहिए।"

व्यक्ति तथा समाज का आपस में गहरा संबंध है। समाज आदान-प्रदान के आधार पर अवलंबित है। धनवान् व्यक्ति का संचित धन सिर्फ उन्हींकी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए नहीं है, बल्कि उसका सदुपयोग उन निर्धनों की उदर-ज्वाला शांत करने में भी है, जो समाज के विशेष अंग हैं। बृहदारण्यक उपनिषद् में सबके सन्मुख स्पष्ट शब्दों में कहने के आशय से बुलंद आवाज में कहा गया है–कि दैवी-वाग् मेघ-गर्जन के रूप में सदा पुकारती है—"दाम्यत् (अपनी इन्द्रियों को वश में रखो), दत्त (दान दो) तथा दयध्वम् (दया करो)" इस मंत्र में सच्ची राजनीति, धर्म और अर्थ-नीति का प्रतिपादन किया गया है। यदि हम लोग इस दैवीवाणी (लोक-वाणी) की पुकार को, जो आज भूदान-यज्ञ के रूप में प्रज्वलित है, सुन कर भी अनाकानी करते हैं, तो यह अपराध हमारा है। दान के बिना समाज तितर-बितर होकर बर्बाद हो जायगा, इसमें संदेह नहीं है। विनोबाजी की परिभाषा में कहा जाय, तो 'दान परिग्रह का ही प्रायश्चित्त है।'

चुनाव बीते : आग कायम है!

(सुरेश राम)

एक गाँव में दोपहर को पहुँचे। गाँव में घुसते ही एक विद्यार्थी दीख पड़ा। उसके साथ बातचीत होने लगी। वह अपने घर लिवा ले गया। उसके पिताजी ने आवभगत से बिठाया और भोजन करने को कहा। हमने कहा कि पहले नहाना है, तो वे बोले-'इस लड़के के साथ तालाब चले जाइये, वहाँ सुभीते से नहा-धो सकते हैं।' तालाब के नजदीक पहुँचे। देखा कि वहाँ स्त्रियाँ नहा रही हैं। हमने उस भाई से पूछा–"यहाँ तो माताएँ-बहनें नहा रही हैं। क्या यहीं सब लोग नहाते हैं?"

लड़का कहने लगा—"इस तालाब के पास एक तालाब और है। पहले उसमें औरतें नहाती थीं, मर्द इसमें नहाते थे।"

"तब उसमें तबदीली क्यों हो गयी?"

विद्यार्थी कुछ शरमा गया। फिर दुःखपूर्वक कहा—"जब से चुनाव की बात चली है, उस तालाब पर प्रजा-समाजवादी घरों के लोग जाते हैं और यह तालाब हम कांग्रेसवालों ने घेर लिया है।"

चुनाव माने गाँव के तालाबों का बँटवारा!

सूरज डूब चुका था। अंधेरा हो रहा था। एक गाँव की हरिजन बस्ती में पहुँचे। मिट्टी की कच्ची झोपड़ियाँ। बच्चे इधर-उधर खेल रहे थे। हमारे साथी ने कहा–"बोलो महात्मा गांधी की जय! बोलो संत विनोबा की जय!!"

लड़के जमा हो गये, मगर सयाने लोग घबड़ा गये। हमने देखा कि आपस में कानाफूसी करते थे—'यह वोटवाले कब पीछा छोड़ेंगे। आये दिन कोई न कोई सिर पर सवार रहता है।'

हमने कहा–"भाई, हम वोटवाले नहीं हैं। हम तो सर्वोदय का सन्देश, सन्त विनोबा का सन्देश लेकर आये हैं।" हमारे साथी ने पाँच मिनट में विचार समझा दिया। लोगों को अच्छा लगा। "जमाने की माळकियत मिटे" और "खेती आपस में प्रेम से बँटे" यह सुन कर भगवान् के वे भक्त, जो सिर का पसीना एड़ी तक सदा बहाते हैं, सिहर उठे। आँखों में ज्योति चमक उठी। मगर उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि यह हो भी सकेगा।

इतनी देर में और लोग आ गये। हमने बताया कि सन् सत्तावन में सारे भूमिहीनों को भूमि मिल जाय, ऐसा संत का संकल्प है। अनहोनी बातें भी इस जमाने में सच हो रही हैं। अंग्रेजों की बादशाहत गयी। राजा-महाराजाओं की रियासतें गयीं, तो कौन ताज्जुब है कि यह बात भी हो जाय!

बातचीत हो रही थी। हमारे साथी ने अधेड़ उम्र के एक भाई से कहा—"रात में हम लोग आपके यहाँ ही ठहरेंगे।"

वह चकित रह गया। उसका चेहरा मुरझा गया!

www.vinoba.in

हमारे साथी ने कहा—"एक रात टिकने की बात सुन कर आप तो भय्या इतने घबरा गये। आखिर ऐसी भी क्या बात है?"

वह भाई फिर भी चुप! साथी ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहा—"जरा बताओ तो कि क्या बात है? अगर आपको एतराज़ हो, तो किसी दूसरे के यहाँ ठहर जायेंगे।"

"हे राम! हे राम!! ऐसी बात मत कहिये। आपको अपने यहाँ ठहरा कर कौन धन्य न होगा? ऐसे सद्भाग्य कब मिलते है?"

कहाँ वह इन्कार, कहाँ यह श्रद्धा! हम दोनों हैरान थे!

फिर वह भाई कहने लगे—"बात यह है कि हम सब प्रजा हैं। (एक जमींदार का नाम लिया) उन बाबू साहब का हुक्म है कि हमें अपना वोट फलाँ बक्स में ही डालना है। अगर किसी दूसरे को दिया, तो हमारा जान-माल, सब ही खतरे में है।"

इसके बाद वह बोले—"हमारे चमरौठे में अगर कोई भी आदमी आता है, तो बाबू साहब को शक हो जाता है कि हम कहीं दूसरे उम्मीदवार के लोगों से तो नहीं मिल गये। फिर तरह-तरह से सताते हैं।"

अंत में उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा—"इसलिए वोट पड़ने तक हम किसी अजनबी को कैसे अपने साथ ठहरा लें? जान के लाले पड़ जायेंगे, महाराज!"

यह कह कर वह फूट-फूट कर रोने लगा।

तीसरे पहर को एक गाँव में सर्वोदय की सभा की। भूमिदान भी मिला। हमारे साथ एक कालेज के अध्यापक, पंडितजी भी थे। सभा हो जाने पर एक सज्जन ने जलपान का निमंत्रण दिया। हमने पंडितजी से कहा कि आप भी चलिये। पंडितजी ने मना किया। हमने इशारा किया। वह इन्कार करते रहे। हमारी समझ में नहीं आया कि क्या बात है। हम जितना आग्रह करें, पंडितजी उतना ही न मानें। मानों जिद पकड़ ली हो। आखिर वे हमारा साथ छोड़ कर गये।

अपने एक साथी के साथ हम फिर उस सज्जन के घर गये। जलपान किया।

मगर मन में पंडितजी की याद आती रही। वहाँ पर मौजूद लोगों से हमने पूछा—"पंडितजी क्यों चले गये?"

एक ने हँसते हुए कहा—"यह जो आपको जलपान करा रहे हैं, पंडितजी के साले लगते हैं।"

हमारा कौतुहल और भी बढ़ा—"तो ससुराल में पानी पीने से क्यों इन्कार किया! दुगुने चाव से आना चाहिए था।"

उसी भाई ने कहा—"बाबू! जमाना बदल रहा है। वह पंडितजी कांग्रेसी हैं, यह उनके सालेसाहब प्रजा-समाजवादी हैं, इसलिए पंडितजी रिसयाये हैं और ससुराल तक नहीं आते-जाते।"

चुनाव माने साले-बहनोई के दिलों में दरार पड़ जाना!

हर पाँचवें साल जब इस तरह देश में आग लगेगी, तो यह आग कितना ज्यादा भयंकर और उग्र रूप लेती जायगी। कैसी दुश्मनी, कैसी अदावत, कैसी मुसीबत यह पैदा कर देगी!!!

द्वारका में आग लगी, तो कृष्णजी ने उसे पी लिया। भारत के आजाद होने पर देश में जो आग लगी—हिन्दू-मुसलमान के बीच जो आग भड़की—उसे गांधीजी ने पी लिया। आज जो यह आग चुनाव के कारण लग रही है—इसे कौन पियेगा? आग लगाने वालों की कमी नहीं। पर आग बुझाने वाले दीखते नहीं। अगर यह आग न बुझायी गयी, तो·····।

यह भेद मिटना चाहिए। यह आग बुझनी चाहिए। यह बुझेगी, जरूर बुझेगी। इसके लिए पानी चाहिए—प्रेम का पानी। प्रेम—जो पक्ष-निष्ठ न होकर सत्य-निष्ठ हो, जो एक को दूसरे के नजदीक लाये, जो दिल से दिल मिलाये। प्रेम कानून से नहीं पैदा हो सकता। कानून खाने वाले की रोटी छीन सकता है। पैसा उसे खरीद सकता है। लेकिन कानून या पैसा खाने वाले के अन्दर खिलाने की प्रेरणा पैदा नहीं कर सकता। कानून दिल में हमदर्दी नहीं जगा सकता। और पैसे को तो देखते ही प्रेम काफूर हो जाता है।

प्रेम पैदा करने का एक ही रास्ता है—त्याग। जहाँ त्याग है, वहाँ प्रेम। बिना त्याग के प्रेम टिक नहीं सकता। प्रेम की इमारत त्याग के आधार पर ही खड़ी हो सकती है। दूसरे पर प्रेम याने दूसरे के लिए त्याग—यानी करुणा!

आज देश में जरूरत है प्रेम की, त्याग की, करुणा की। जो प्रेम घर की चहार-दीवारी में बन्द है, उसे बाहर लाने की, उसे समाज में लाने की, उसे गाँव-व्यापी बनाने की। गाँव के अन्दर प्रेम की, त्याग की, करुणा की गंगा बहती रहे। तभी यह आग बुझेगी। तभी देश सुखी होगा। तभी दुनिया में शांति आयेगी।

कोरापुट के कुछ संस्मरण

(गुरुशरण सक्सेना)

सम्राट अशोक को अहिंसा और मानवता की दीक्षा देने वाला तब का कलिंग, आज का उत्कल, भारत के सांस्कृतिक इतिहास में गौरव के पद पर प्रतिष्ठित है। उसका जन-मानस में एक अमिट स्थान है। आज उत्कल की उत्कृष्टता कोरापुट जनपद के ग्रामदानों से और भी ऊँची हो उठी है, कोरापुट आज भूमि-क्रान्ति के तीर्थ के रूप में प्रसिद्धि पा रहा है। भू-दान-यज्ञ-आन्दोलन के गर्भ में स्वामित्व-विसर्जन का जो भाव निहित था, उसका प्रथम दर्शन उत्तर-प्रदेश के मंगरौठ ग्राम में हुआ, पर उसकी व्यापकता की झलक कोरापुट में दीखती है। जहाँ पृथ्वी-पुत्र ने धरती को 'माँ' कह कर पुकारा, वहाँ "जमीन गाँव की और खेती किसान की" के सुवास से वातावरण सुरभित हो उठा। धन्य है उत्कल के गोप बाबू और विश्वनाथ पट्टनायक, जिनके नेतृत्व में विनोबाजी की अलख से कोरापुट जनपद के १३०० ग्राम जाग उठे हैं। बच्चा-बच्चा पुकार रहा है:

"आमगारे भूमिहीन, रहिबे नाहीं, रहिबे नाहीं।"

समस्त भारत में आदिवासी लोग तथाकथित पिछड़े हुए और असभ्य समझे जाते हैं, क्योंकि वे आदिम तौर-तरीके से अपनी जिंदगी बसर करते हैं और मानवीय दुर्गुणों को छिपाने की कला से अनभिज्ञ हैं। ये लोग आर्यों से पहले भारत में आये और बाद में आने वाली शक्तिशाली जातियों की उपेक्षा और तिरस्कार से दुःखी होकर उनकी दुनिया से दूर, पहाड़ों पर प्रकृति की गोद में चले गये। दुखिया माँ के पास प्यार का हाथ फेरने के सिवा और सम्पत्ति ही क्या? ये बेचारे घास-फूस के झोपड़े बना कर पहाड़ों के अंचल में थोड़ी-बहुत समतल भूमि पर कुछ अन्न उपजा कर और मडुआ व घास के बीज से अपना पेट भरने लगे—जिसे भोजन कहना 'भोजन' शब्द का उपहास करना होगा। दुःख है कि इन गरीबों की अँतड़ियों को भी निचोड़ने के लिए मैदान के महाजन पहुँच जाते हैं। सर्व-सेवा-संघ की कोरापुट में हुई निर्माण-समिति की बैठक में कोरापुट के कार्यकर्ताओं के साथ इन आदिवासियों की जो दीन दशा इन दिनों देखी, वह बड़े दर्द के साथ देख पाया, क्योंकि इन आँखों को तो मैदान की चमक-दमक और चकाचौंध ही अभी तक मिलती रही है! यहाँ कोरापुट के ग्रामदानी गाँवों में सर्वत्र ऋषि दधीचि के अस्थि-पंजर दिखे। गरीबी के बीच उनकी वेदाग संस्कृति, सरलता, संगठन, उल्लास भरा जीवन, सब कुछ एक अद्भुत कहानी है।

"मोर आँखी फूटी जीबा!"

बापू की आत्मकथा-"सत्य के प्रयोग" में पढ़ा था, "सत्य ही परमेश्वर है।" स्व०मश्रूवालाजी, जाजूजी और पू०नाथजी के व्यवहारशुद्धि-आन्दोलन में सत्य-असत्य और सूक्ष्म असत्य की व्याख्याओं को भी पढ़ा था। पर व्यावहारिक जगत् में सत्य का खुल कर आचरण करने में सदैव झिझक रहती है। सच बोलने के पहले उसका परिणाम सोच लो, ऐसा बुद्धि का आदेश सदैव रहा है। पर कोरापुट के निकट जयपुर की एक कोर्ट में सुना: "ऐ बाबू, क्या कहता है? मोर आँखी फूटी जीबा।" एक आदिवासी युवती कुछ हिन्दी और कुछ अपनी आदिवासी बोली में वकील को मुँहतोड़ उत्तर दे रही थी।

अभियोग था—अतिथि ने युवती को कुदृष्टि से देखा, जिसे सुनते ही उसके पति ने अतिथि की गर्दन पकड़ कर लकड़ी काटने की कुल्हाड़ी से उसका गला काट दिया। प्रश्न उपस्थित था—उसके पति को फाँसी देने का। पति ने तो सारी घटना सुना दी थी, पर वकील का प्रयत्न था कि पत्नी यह कह दे कि अतिथि ने पहले वार किया।

लेकिन पत्नी का उत्तर था; "मोर आँखी फूटी जीबा"-मेरी आँखें फूट जायेंगी।

धर्मराज युधिष्ठिर ने सूक्ष्म असत्य कह दिया था—'अश्वत्थामा मरा,' 'नरो वा कुंजरो वा,' तो मन को समझाने की बात थी। पर यहाँ तो आदिवासी युवती इतना असत्य भी न बोल सकी कि अतिथि ने पहले आक्रमण किया है! सत्य का साक्षात् इससे बढ़ कर क्या होगा?

महाजनों का दस्तूर!

खरगपुर ग्राम की बात है:

सर्व-सेवा-संघ की ओर से नियुक्त भू-दान-कर्मी उक्त ग्रामदानी ग्राम की कष्ट-कथा उड़िया भाषा में कह रहा था, जिसे कुछ लोग समझ रहे थे, कुछ समझने वालों के मुँह के हाव-भाव से अन्दाज लगा रहे थे, पर जब १ पुट्टी का ३ पुट्टी सुना, तो सबने अपनी नासमझी व्यक्त कर दी।

www.vinoba.in

कर्मी ने समझाया :

महाजन इन भोले आदिवासी कृषकों से कहता है :

एक पुट्टी बीज तुमने निकाला

एक पुट्टी बीज तोला

एक पुट्टी ले गये

तीन कंकड़ रख कर बता दिया कि देखो, तीन हुआ।

आदिवासी की समझ में यह गणित नहीं आता। वह देखता है कि लाया तो थोड़ा था, जा बहुत रहा है! सोचता है, महाजनों का यही दस्तूर होगा!

"ऋणी रह कर मरूँ, बुरी बात है"

एक गाँव का संस्मरण है :

"ऋणी रह कर मरूँ, बुरी बात!"

उस ऋणी के पिता ने ४०) का ऋण लिया था, जिसका ब्याज चक्रवृद्धि ब्याज के रूप में उसके मर जाने के बाद भी बेटे पर चक्कर लगा रहा था। पिता ने २० साल नौकरी की और मर गया। अब बेटा २० साल नौकरी करे, तब ४० साल में मूलधन चुकेगा और शायद ब्याज में उसके बच्चों को भी नौकरी करनी पड़े! उसको बहुत समझाया कि भाई, सब मूल ब्याज चुक गया। २० साल की नौकरी थोड़ी नहीं होती। उसके सरल मन को बात स्वीकार नहीं हुई।

देने की भावना

श्री नवबाबू ने अपनी भू-दान पद-यात्रा का प्रसंग बताया कि उनको शहर में ५० मील दूर एक गाँव में शहर के ऑफीसर्स क्लब के एक ड्रामे का टिकट मिला, पूछा : "क्या ड्रामा देखने नहीं गये?"

"देखने को थोड़े ही लिया था!"

"फिर क्या, वे जोर-जबरदस्ती से टिकट देकर पैसा ले गये।"

"नहीं बाबू! एक साहब सरोखा आया। खूब अच्छे कपड़े, सर पर टोप और २) रु० हमने दे दिये।"

"इतना बड़ा साहब हमारे दरवाजे पर २) माँगे! कौन बड़ी बात! दे दिया।"

"हम राजा हैं!"

इन आदिवासियों में भी जाति-पाँति का झगड़ा है। डोम जाति के लोगों को अछूत मानते हैं, जो मिट्टी के बर्तन बनाते हैं, वे अपने नाम के आगे 'प्रजापति' शब्द का प्रयोग करते हैं। अपने को राजा मानते हैं और डोम को अपना नौकर कहते हैं। खेती करना भी नौकरों का काम समझते हैं। जानवरों में छोटे-छोटे बैल और कमजोर गायें व बकरियाँ वगैरह जो उनका पशुधन है, राजा उन्हींको चराने का काम करता है और जंगल से लकड़ी वगैरह भी काट लाता है!

कैसा है वह देश?

इस ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र में चारों ओर पहाड़ और जंगल ही जंगल दिखायी देते हैं, न कहीं रेल की पटरियाँ और न डामर की सड़कें। बड़े-बड़े शहरों को एक-दूसरों से मिलाने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी ऊँची-नीची चक्करदार कच्ची सड़कें हैं, जिन पर दिन में एक-दो बार सरकारी बस बेहद धूल उड़ाती हुई निकल जाया करती है। बस की यह सुविधा कुछ ही जगह है। वैसे तो बैलगाड़ियों के आने-जाने का भी रास्ता नहीं है। साढ़े छह हजार गाँवोंवाला ९८७५ वर्गमील का यह पूरा का पूरा जनपद अशिक्षित, अविकसित, उपेक्षित और हर तरह से पिछड़ा हुआ है।

इन्सान की गरीबी इससे बढ़कर और क्या होगी?

रहने के नाम पर पेड़ की छाया और घास-फूस की झोपड़ी, पहनने के नाम पर गज भर की लंगोटी एवं खाने को मँडुआ! बर्तन देखिये तो बस मिट्टी के। एक-दो जगह एलुमिनियम के। नहीं हुआ, तो सूखी लौकी को पोला करके बनाये गये छोटे-चम्मच ही काफी हैं। खेती के बैल ठिंगने और कमजोर! बस! दुर्बलता में मालिकों से होड़ करते हुए। गायों को जब चारा-दाना नहीं, तो दूध कहाँ से आवे? अतः गोमाता भी आदिवासी माता की भाँति खेत में काम करती है।

निर्माण-कार्य की समस्या

ऐसे क्षेत्रों में ग्राम-निर्माण का काम कितना जटिल है; यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। विनोबा ठीक ही कहते हैं कि पत्थर की चट्टानों के नीचे भी जल होता है। उड़ीसा छोड़ने पर उन्होंने वहाँ अपने और दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि के रूप में सर्व-सेवा-संघ के मंत्री श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे को ग्रामदानी ग्राम गोकुल बनाने को कहा, जिसके फलस्वरूप आज अण्णा के आवाहन पर अनेक नवयुवक सदियों से उपेक्षित इस धरती को साजने और सँवारने में जुट गये हैं। अभी वहाँ भूमि-सुधार (Soil conservation) और ग्रामोद्योगों के विकास के प्रयत्न चल रहे हैं। अब उन्हें अपना जंगल भी काम का लग रहा है। किसानों में अच्छे औजारों और बढ़िया बीज की बातें चलती रहती हैं। गाँव की दूकान उन्हें देवता का वरदान-सी दिखती है, क्योंकि उसमें उन सबका पैसा लगा है। उसे वे अपनी मानते हैं। उसमें बड़े-बूढ़े सहकारी ढंग से अपनी उपज की बिक्री के सम्बन्ध में विचार करते हैं। अब तो वे महाजन से हँस कर कहते हैं—"भूदानी बाँटों से अनाज तौलेंगे, क्योंकि महाजन के देने और लेने के बाँटों में बड़ा फर्क है।"

लेकिन इससे यह न समझ लेना चाहिए कि इन ग्रामदानी गाँवों की काया ही पलट गयी है या वहाँ कोई स्वर्ग बस गया है। ऐसी आशा आज करना उचित न होगा। सामाजिक और आर्थिक जीवन का अभी वहाँ नया ढाँचा खड़ा करना है। उड़ीसा के भूदान-यज्ञ-कानून के अनुसार कहीं-कहीं अभी जमीन के वितरण में भी कानूनी दिक्कतें हैं। सामाजिक अड़चनें भी हैं। सहजीवन का स्वभाव डालने में जाति-पाँति, छुआछूत, मान-सम्मान, धर्म-अधर्म आड़े आता है। बच्चों को शिक्षित करने की बात पर सभी के मुँह से एक-स्वर से एक ही बात निकलती है! भूख! भूख!! भूख!!!

सर्व-सेवा-संघ की ओर से उनकी दिक्कतों को हल करने के विधायक प्रयत्न चल रहे हैं। गाँव-गाँव में दूकान, हल-बैल की सहायता, गांधी-घर की स्थापना उनके बीच परिवर्तन के प्रतीक हैं और यह निश्चित है कि एक दिन कोरापुट अपनी नयी कहानी कहेगा और यह कहानी होगी—नये भारत में ग्रामराज की कहानी।

क्रांतिकारी खुरपी!

(सरस्वती "कुमार")

क्रांति-पथ पर निकले खादीग्राम-परिवार को अभी चंद दिन ही हुए हैं, पर हर जगह, हर समय और हर तबके में एक प्रश्न ही बहुत बार पूछा जाता : "यह खुरपी किसलिए है?" प्रश्न उस खुरपी से संबंधित होता था, जो हमारे लिए बिस्तरों की डोरियों से बंधी होती थी। टोली के प्रत्येक सदस्य के बिस्तर के साथ एक-एक खुरपी। बिस्तर चाहे न भी हो, परंतु खुरपी अवश्य ही देखने को मिलती थी और जब हम एक हाथ में खुरपी और दूसरे में जल का पात्र लिये शौच के लिए तैयार होती थीं, तो क्या घर के और क्या बाहर के; क्या भाई और क्या बहनें, बच्चों से लेकर बुढ़ियों तक सभी आँखें फाड़-फाड़ कर हमारी खुरपी को देखने लगते थे। और तब हमारी टोली-नायिका विद्या बहन तो शायद इसी प्रश्न को सुनने के लिए जैसे कमर ही कस कर बैठी हों। जब तक मुँह से प्रश्न निकलता है, वे उस खुरपी को लेकर अर्थशास्त्र के पन्ने उलट देतीं, कृत्रिम खाद के दुष्परिणाम प्रकट करतीं। मतलब यह कि उस निमित्त से नयी तालीम का एक वर्ग ही हो जाता, जिसमें सभी शास्त्र आ जाते।

उसके बाद हमारी टोली की साधना बहन, जो सर्वोदय तथा भूदान-दर्शन का अध्ययन करने के लिए कनाड़ा से आयी हुई हैं, बड़े प्रेम से टूटी-फूटी; परंतु शुद्ध हिंदी में उस छोटी-सी खुरपी का भारत के नवनिर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान बतातीं कि किस प्रकार शौच जाने के पहले गड्ढा खोदते हैं और बाद में मल को मिट्टी से ढँकते हैं। उनका कहना है कि भारत में प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक गाँव यदि अपने मल-मूत्र की व्यवस्था ठीक ढंग से स्वयं ही करे, तो न केवल सफाई हो विकेंद्रित रूप से होगी, वरन् प्रतिदिन इतनी खाद अनायास में ही पैदा हो सकेगी, जो तीस करोड़ रुपया खर्च करने पर सिंद्री के कारखाने में एक वर्ष में पैदा होती है। वास्तव में सफाई और खाद, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना एक के दूसरा संभव नहीं।

कितना गूढ़ अर्थ भरा है, इस छोटी-सी खुरपी में और कितना क्रांतिकारी प्रभाव पड़ता है, सुननेवाले पर; इसका तो केवल प्रत्यक्ष ही अनुभव किया जा सकता है! बापू ने ठीक ही कहा है : "मौन कभी-कभी वाणी से अधिक वाचाल होता है।"

श्री किशोरलाल भाई की पंक्तियाँ :

"शरीर-मन-आरोग्य, सफाई घर-गाँव की।
प्रबंध खाद-कूड़े का, व्यवस्था मल-मूत्र की।
…इसमें हैं, सभी तत्त्व अहिंसक स्वराज्य के।" की बरबस याद आ जाती है।

---

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से–

(महादेवी)

टेढ़ा-मेढ़ा और ऊँचा-नीचा रास्ता, अंधेरे में दोनों बगल में दो सेवक प्रकाश दिखा रहे हैं, पर बाबा का पैर लड़खड़ा रहा है। बाबा कहने लगे, "बुढापे और बचपन में क्या फर्क है ? पैर लड़खड़ाता है, दाँत नहीं, शब्द भी ठीक नहीं निकलता ! लेकिन इसके साथ वृत्ति भी बालवत् बन जाय, तो बेड़ा पार है ! कबीर ने कहा है न : 'ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।' जैसे कोरे निष्कलंक आये थे, वैसे ही वापस जाना चाहिए।"

चलते हुए सामने एक बड़ा शैल दीख रहा था। उस पर पेड़-पौधे कुछ नहीं थे। ऊँची और सीधी, सरल चट्टान थी। बाबा कहने लगे, "निरा पहाड़ है।" किसीने कहा–"नंदी-दुर्ग में टीपू के नाम से ऐसा ही पहाड़ है, जहाँ से कैदियों को ढकेला जाता था।"

बाबा ने कहा, "हाँ, पहले के जमाने में पहाड़ से गिराना, हाथी के पैरों तले कुचलवाना, अग्नि में जलाना आदि क्रूर कृत्य मानव ही मानवों पर करते थे।" फिर पश्चिमी सभ्यता की ओर इशारा करते हुए कहा, "यूरोप में तो गुनहगार को शेर-भक्ष्य बनाया जाता था। चारों ओर बड़ा कंपौंड रहता था। पिंजड़े में भूखे शेर रखते थे। उस कंपौंड के अंदर कैदी को छोड़ देते थे और पिंजडे का दरवाजा खोल देते थे। आदमी पर शेर कैसा झपटता है, यह तमाशा देखने के लिए बाहर लोग भी खड़े होते थे। प्रारंभ में जिन्होंने ईसाई धर्म अपनाया, उनको ऐसी ही यंत्रणाएँ दी गयी थीं। ऐसा है, यह मानव-प्राणी !

हमारा पड़ाव उसी पहाड़ की बगल में था। पहाड़ एकदम गोल घुमट-जैसा एक ही पत्थर से बना हुआ-सा था। बाबा वेद का अध्ययन कर रहे थे। वैसे तो बाबा चिंतन में हमेशा ऊँची उड़ान लेते रहते हैं। बगल में ही खडे शैल पर नजर गयी, मानो शैल आवाहन दे रहा हो।

दिन में करीब ४ बजे का समय था। कड़ी धूप थी। बाबा उठ कर शैल चढ़ने के लिए उद्यत होकर निकल पड़े। साथ में गाँव के कुछ लोग और बच्चे भी शामिल हो गये ! मैंने हमेशा के समान अडंगा लगाया : "इतनी धूप में ऐसी कड़ी चढ़ाई न चढें।" लेकिन बाबा कहाँ रुकने वाले थे ! मुझको भी जोश आ गया, मैं भी दौड़ पड़ी। चौथाई हिस्सा चढ़ चुकी थी। बाबा भी आधा हिस्सा चढ़ चुके थे। दूर से हाथ हिला-हिला कर मना कर रहे थे मुझे–"अरे महादेवी, तुम मत आओ, सीढ़ी के निशान भी नहीं हैं। पैर फिसलेगा, तो सँभालना मुश्किल है।" मैं कुछ हठ करके और ऊपर चढ़ी। लेकिन बाबा का रुख देख कर वहीं बैठ गयी। उतरते समय बाबा कैसे उतरेंगे, इसका विचार करते हुए मैं वहीं बैठी रही। पाँच बजे तक बाबा उतर आये। साथ वालों ने कहा, "बहुत कड़ी चढ़ाई थी। बहुत मुश्किल से और हिंमत के साथ बाबा उतरे !"

प्रवचन में पहाड़ का उल्लेख करते हुए कहा, "आपका यह छोटा गाँव है। बगल में ही एक सुन्दर पहाड़ है। इस पहाड़ को देख कर हमको बड़ी स्फूर्ति आयी। पलनी के पहाड़ पर हम चढ़े थे। हजारों लोग वहाँ चढ़ते हैं। वह यात्रा का स्थान है। वहाँ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और हाथी जाने का भी रास्ता है। वहाँ तो आलसी भी जा सकता है ! इस पहाड़ पर पुरुषार्थी और श्रद्धावान ही चढ़ सकते हैं। हमारे साथ दो स्थानीय व्यक्ति थे, जिन्होंने हमें पकड़ कर उतारा।" फिर बाबा ने कहा, "पहाड़ पर चढ़ने का हमारे लिए क्या कारण था ? यहाँ के लोगों से एकरूप होना था।"

भूदान-यात्रा के सिलसिले में पाँच साल के पहले बाबा काशी-विद्यापीठ में दो महीने ठहरे थे। तब तमिलनाड़ के एक निष्ठावान खादीधारी ग्रामीण का पत्र आया था। बाबा के सेक्रेटरी ने जवाब दिया था कि "तुम सूत कात कर अपना जीवन-निर्वाह करते हो, यह अच्छा है। कभी बाबा तमिलनाड़ आयेंगे, तब उनसे मिलना।" अब इस बात को पाँच साल हो गये। इत्तफाक से एक दिन उसी भाई के गाँव में बाबा का पड़ाव रहा। वह भाई मौका पाकर उस आश्वासनदायी पत्र के साथ बाबा के सामने हाजिर हो गये। उन्होंने दुःख से कहा, "मैं रोज़ चार घंटे कातता हूँ। छह-छह महीने तक कोई गुण्डियाँ ही खरीदते नहीं। हमारा जीवन कैसे चलेगा ?" इसका उल्लेख करते हुए शाम की सभा में बाबा ने कहा, "जब गाँव के लोग ही गाँव के बेकारों को काम देने की जिम्मेवारी उठायेंगे, तभी यह मसला हल होगा। इसीलिए हम ग्रामदान की बात करते हैं।"

तमिलनाड़ की भूदान-यज्ञ-वार्ता

(मीरा व्यास)

जिस क्रांतिकारी भूमि में "तालुका-दान" के शब्दोच्चार का प्रथम अवतरण हुआ, उस मदुरा जिले में, जहाँ '५७ के संमेलन की पूर्ति हम तालुका-दान से करेंगे," इस प्रतिज्ञा का उच्चारण हुआ था, उस तिरुमंगलम् तालुके में विनोबाजी की पदयात्रा इन दिनों चल रही है। बिलकुल छोटे-छोटे गाँव, शहरी संस्कृति की जहाँ छूत नहीं लगी है, वैसे गाँवों को देख कर बाबा एक कहानी सुनाते हैं : "एक बहुत बड़ा धनिक एक छोटे गाँव में गया। भूख लगी, तो पहुँचा एक दूकान में। बारह आने का खाना खरीदा। उसने लाख रुपये की नोट सामने रखी। दूकान-वाले ने कहा, "मेरे पास तो सिर्फ चार आने हैं। बाकी रुपये मैं वापस न कर सकूँगा, सिर्फ चार आना कर सकता हूँ।" ९९९९९ रुपये यों ही खो देने की धनिक में हिम्मत नहीं थी। लाख रुपये होते हुए भी, उस दिन वह बेचारा धनिक गाँव से भूखा वापस गया।" वैसी ही हालत इन गाँवों की है। अगाध ज्ञान का खजाना लेकर विनोबाजी उनके पास पहुँचते हैं, परंतु "मक्खन" पचाना उनके लिए मुश्किल है, उनके वास्ते "दूध" ही चाहिए। इसलिए बाबा भी सहजगम्य और सरल ढंग से ग्रामदान का विचार बहा रहे हैं।"

महाराष्ट्र के भूदान-सेवक श्री गोविंदराव देशपांडे से तंत्रमुक्ति याने व्यवस्था-मुक्ति नहीं है और शासन-मुक्ति याने शासन-हीनता नहीं है, इसके बारे में चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "हम-आप सेवा के प्लॅटफॉर्म पर खड़े हैं और वहाँ से दो अलग-अलग रास्ते जाते हैं। एक रास्ता जाता है, सेवा से व्यवस्था और व्यवस्था से सत्ता की दिशा में। दूसरा रास्ता जाता है, सेवा से भक्ति या निष्कामता और भक्ति से अहंकार-मुक्ति या संन्यास की ओर। अब व्यवस्था और भक्ति हमें चाहिए, परंतु व्यवस्था से आगे सत्ता की ओर बढ़ते हैं, तो वहाँ अत्यन्त सक्रियता आती है और इधर भक्ति से अहंकार-मुक्ति की अवस्था प्राप्त करते हैं, तो वहाँ निष्क्रियता आ जाने का संभव है।" मुझे अभिमान नहीं है, यह कहना भी एक प्रकार का अभिमान ही है। इसलिए अभी हमें मुक्ति तक प्रगति नहीं करनी है। सेवा एक कॉमन प्लॅट-फॉर्म है। हमारा रास्ता भक्ति से व्यवस्था तक का है।"

बम्बई से आये हुए श्री माधवराव देशपांडे से बात करते हुए कहा, "प्रतिभा व्यक्ति में होती है, संस्था में नहीं। ईसाई-धर्म के प्रति लोगों की इतनी आस्था होने का कारण ईसा का जीवन है। बौद्ध-धर्म के प्रति सारी दुनिया खिंचती है, उसका कारण बुद्ध का जीवन है।"

इन दिनों विनोबाजी पत्रों के द्वारा कार्यकर्ताओं को निरंतर कार्यरत रहने की प्रेरणा दे रहे हैं। एक पत्र में लिखा, "हम जितनी मात्रा में शून्यवत् बन सकेंगे, उतनी मात्रा में ही हमारा कार्य शक्तिशाली होगा। शून्य और शक्ति बिलकुल परस्पर-विरोधी-से शब्द मालूम होते हैं, पर अनुभव में वे विरोधी नहीं हैं। मेरा विश्वास है कि हम शून्य हो जायेंगे, तो शरीर भी ठीक काम देगा, क्योंकि उस पर भी आक्रमण नहीं होगा।"

मदुरा जिले में तोपपट्टी नाम के एक जमींदार भाई ने ग्रामदानविरोधी-प्रचार शुरू किया है। उन्होंने अपना ११ मुद्दोंवाला एक कार्यक्रम बनाया है। उनका ग्रामदान के बारे में एक आक्षेप था कि "ग्रामदान से गाँव का 'इनिशिएटिव' कम होगा, क्योंकि सबकी जमीन एक की हो जायगी और बाँट कर खाना होगा।"

विनोबाजी ने कहा, "ग्रामदान के गाँव में सामुदायिक खेती ही होगी, यह आपका गलत खयाल है। हरएक गाँव अपनी-अपनी परिस्थिति देख कर तय करेगा कि गाँव की जमीन परिवार में बाँटनी है या ब्लॉक्स करना है या सामुदायिक करनी है। दूसरी जो इनिशिएटिव की बात है, छोटे परिवार में ज्यादा काम करेगा कि बड़े परिवार में ? छोटे परिवार में मिया-बीबी अकेले रहते हैं, तो स्वाभाविक ही काम कम होता है। ग्रामदान में सारा गाँव एक बड़ा-परिवार होगा। उसमें लोगों को अधिक काम करने की प्रेरणा होगी कि कम काम करने की ? बड़े परिवार में जिम्मेवारी कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती है।"

उनका दूसरा आक्षेप था कि 'गाँव में कुछ लोग आलसी रहेंगे।' विनोबाजी ने कहा, "आपके परिवार में आपका कोई भाई आलसी होता है, तो आप क्या करते हैं ? वही ग्रामदान के गाँव में किया जायगा। आप ज्यादा उद्योग करिये। उससे उसको प्रेरणा मिलेगी। अगर उससे भी उसका आलस न हटे, तो भगवान् से प्रार्थना करो। सुबह सात बजे तक उठता नहीं है, तो "पल्लीएलुचि" (जगाने

www.vinoba.in

के लिए गाने का भजन) गाओ और कहो कि "उठो भैया ! अब तो मार्गशीष महीना आया है ! चलो स्नान के लिए ।" "हरएक हृदय में राम बसा हुआ है। किसीका आज जग गया है, तो किसीका कल 'जगेगा," इस दृढ़-श्रद्धा के सामने वे भाई क्या ज्यादा दलील करते ! बाकी की उनकी शंकाएँ ऐसी थीं, जिनके प्रत्युत्तर बाबा ने पाँच साल पहले ही दे दिये हैं। जब आये, तब वे कहते थे कि ग्रामदान से नुकसान है; परंतु जब गये, तब कबूल करते गये कि इसमें नुकसान नहीं है और लाभ भी नहीं है। "जहाँ घना अंधकार होता है, वहाँ दीपक का प्रकाश और ज्यादा फैलता है," विनोबाजी के इस विचार के मुआफिक ग्राम-दान के विचार का सत्यप्रकाश तिरुमंगलम् के गाँव-गाँव में उजाला फैला रहा है।

सर्वोदय-संमेलन : सूचनाएँ

रेलवे-कन्सेशन-सर्टिफिकेट प्राप्त करने एवं सर्वोदय-सम्मेलन, कालड़ी के लिए ३) रु० निवास-शुल्क भेजने के लिए अधिकृत स्थान व पते :

एतद् संबंधी सूचनाएँ 'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंक में छप चुकी हैं। निवास-शुल्क भेजने एवं कन्सेशन-सर्टिफिकेट प्राप्त करने की अंतिम ता० २० अप्रैल '५७ है।

उत्तरप्रदेश :

(१) श्री व्यवस्थापक, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी
(२) श्री मंत्री, श्री गांधी आश्रम, मुरादाबाद (उ० प्र०)
(३) श्री व्यवस्थापक, श्री गांधी आश्रम, चांदनी चौक, दिल्ली
(४) श्री मंत्री, श्री गांधी आश्रम, प्रधान कार्यालय, मेरठ (उ० प्र०)
(५) श्री व्यवस्थापक, स्वराज्य आश्रम, जनरलगंज, कानपुर (उ० प्र०)
(६) श्री व्यवस्थापक, श्री गांधी आश्रम, खादी भंडार, झाँसी (उ० प्र०)
(७) श्री व्यवस्थापक, श्री गांधी आश्रम, खादी भंडार, हजरतगंज, लखनऊ

पंजाब :

(१) श्री मंत्री, पंजाब-खादी-ग्रामोद्योग-संघ, अम्बाला छावनी (पंजाब)

मध्यप्रदेश :

(१) श्री व्यवस्थापक, श्री गांधी आश्रम, खादी भंडार, जबलपुर (म०प्र०)
(२) श्री व्यवस्थापक, श्री गांधी आश्रम, खादी भंडार, रॉयल मार्केट, भोपाल
(३) श्री मंत्री, म०प्र० भूदान-यज्ञ-बोर्ड, पो० नरसिंहपुर, जि० नरसिंहपुर (म०प्र०)
(४) श्री चतुर्भुज पाठक, गांधी-स्मारक-निधि, छतरपुर (म० प्र०)
(५) श्री स्वामी प्र० दीक्षित, भूदान-कार्यकर्ता, सतना (म० प्र०)
(६) श्री मंत्री, हरिजन-सेवक-संघ, मोती तबेला, इन्दौर (म० प्र०)
(७) श्री मंत्री, मध्यभारत भूदान-यज्ञ-पर्षद, सरदार पाटणकर का बाड़ा, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

बिहार :

(१) श्री मंत्री, बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ, प्रधान कार्यालय, सर्वोदय-ग्राम, पो० बॉ० नं० ३३, मुजफ्फरपुर (बिहार)
(२) श्री व्यवस्थापक, सर्वोदय-आश्रम, पो० रानीपतरा, जिला-पूर्णिया
(३) श्री व्यवस्थापक, बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ खादी-भंडार, रांची
(४) श्री मंत्री, अ०भा०सर्व-सेवा-संघ, प्रधान केन्द्र, पो० खादीग्राम, जि० मुंगेर

राजस्थान :

(१) श्री केसरपुरी गोस्वामी, गांधी-स्मारक-निधि, राजस्थान शाखा, भीलवाड़ा
(२) श्री मंत्री, राजस्थान समग्र-सेवा-संघ, किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर (राजस्थान)
(३) श्री व्यवस्थापक, राजस्थान खादी-संघ, खादी भंडार, स्टेशन रोड, जोधपुर (राजस्थान)
(४) श्री व्यवस्थापक, खादी-मंदिर, खादी-भंडार, के० ई० एम० रोड, बीकानेर (राजस्थान)
(५) श्री व्यवस्थापक, खादी-भंडार, उदयपुर (राजस्थान)

बंगाल :

(१) श्री संयोजक, सर्वोदय-प्रकाशन-समिति, सी०५२, कॉलेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता-१२ (प० बंगाल)

आसाम :

(१) सुश्री अमलप्रभा दास, पान बाजार, गौहाटी (आसाम)

उड़ीसा :

(१) श्री व्यवस्थापक, अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, पो० रायागड़ा, जिला-कोरापुट (उड़ीसा)
(२) श्री मंत्री, उत्कल खादी-मंडल, थोरियासाही, कटक-१ (उड़ीसा)

बम्बई राज्य :

(१) श्री मंत्री, अखिल भारत-सर्व-सेवा-संघ, मगनवाड़ी, वर्धा (बम्बई राज्य)
(२) श्री मंत्री, महाराष्ट्र सेवा-संघ, ३६१, सदाशिव पेठ, पूना २ (बम्बई राज्य)
(३) श्री गणपति शंकर देसाई, मणिभुवन, १९ केवरनन् रोड, गाँवदेवी, बम्बई-७
(४) श्री संयोजक, सर्वोदय-प्रकाशन-समिति, घड़ियाली पोल, बड़ौदा
(५) श्री व्यवस्थापक, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, अम्बर-विभाग, हरिजन आश्रम, अहमदाबाद-१३ (बम्बई राज्य)
(६) श्री कनु गांधी, राष्ट्रीय शाला, राजकोट (सौराष्ट्र-बम्बई राज्य)

ग्रामोद्योग-व्रतवालों के लिए :

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन में आने वालों में से जिन लोगों को भोजन में ग्रामोद्योगी वस्तुओं का व्रत हो, उसकी सूचना स्वागत-समिति को पहले से मिलना आवश्यक है; जिससे ग्रामोद्योगी भोजनवालों के लिए अलग इन्तजाम किया जा सके। अतः ग्रामोद्योग-व्रतवाले कृपया अपने व्रत की सूचना तुरन्त अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ, पो० खादीग्राम (जिला-मुंगेर) या मंत्री, स्वागत-समिति, सर्वोदय-सम्मेलन, त्रिचुर (द. भा.) के पते पर भेज दें। —सहमंत्री

सत्-प्रयास

सूचित करते हुए खुशी होती है कि गांधी-आश्रम उत्तरप्रदेश ने अपने समस्त भंडारों में अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ, प्रकाशन-विभाग का पूरा साहित्य नक़दी से खरीद कर रखना तय किया है और यह भी तय किया है कि काशी से उनके भंडारों तक पोस्टेज, पैकिंग, रेल-किराये आदि का जो खर्च होगा, वह गांधी-आश्रम के भंडार उठायेंगे। साहित्य की व्यवस्था का हिसाब आदि भी वे खुशी से रखेंगे और काशी से नक़द-बिक्री पर मिलने वाला पूरा का पूरा ३३⅓ प्रतिशत कमीशन कार्यकर्ताओं को दे देंगे। १०० रुपये मासिक तक साहित्य बेचने वाले भूदान-कार्यकर्ताओं को गांधी-आश्रम अपनी ओर से ३३⅓ के अतिरिक्त १७ प्रतिशत तक विशेष कमीशन भी देगा। यह कमीशन उन्हीं कार्यकर्ताओं को मिलेगा, जिनको वे स्वीकृति देकर दर्ज करेंगे।

बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ ने भी पोस्टेज, पैकिंग, रेल-खर्च बर्दाश्त करके अपने भंडारों से ३३⅓ प्रतिशत कमीशन कार्यकर्ताओं को देना तय किया है। पूरा समय देने वाले और निधिमुक्त कार्यकर्ताओं के लिए साहित्य-बिक्री पर अपनी ओर से विशेष सुविधा भी देंगे।

मध्यभारत-खादी-संघ के मंत्री सूचित करते हैं कि वे भी इंदौर, उज्जैन, लश्कर, भोपाल और रतलाम; इन पाँच स्थानों में अपने भंडारों से भूदान-कार्यकर्ताओं को विशेष कमीशन देंगे। काशी से उन्हें ३३⅓ प्रतिशत कमीशन मिलेगा, जिसमें से खर्च जाकर २७ प्रतिशत के लगभग बचेगा, वह सारा और १३ प्रतिशत अपनी संस्था की ओर से, इस तरह कुल मिला कर ४० प्रतिशत कमीशन देंगे। पूरी जानकारी संबंधित भंडारों से प्राप्त की जाय।

साहित्य-प्रचार के हेतु इन सारे सत्प्रयासों का हम स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि अन्य खादी एवं रचनात्मक संस्थाएँ भी इसी तरह भूदान-साहित्य-प्रचार के कार्य में हाथ बटायेंगी।

—संचालक, सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

संवाद-सूचनाएँ :

उत्तर प्रदेश प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन

उत्तर प्रदेश का प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन अप्रैल ता० २६, २७ और २८ को झाँसी में होना तय हुआ है। जो सज्जन भाग लेना चाहें, वे १० अप्रैल तक निम्न पते पर अपने नाम और पते के साथ प्रवेश-शुल्क १) मात्र भेजें।

श्री गांधी आश्रम, झाँसी (उ. प्र.) —लोकेन्द्र सिंह, जिला-निवेदक

www.vinoba.in

निवेदकों की नामावली

ता० २६ फरवरी '५७ तक के प्राप्त जिला-लोकसेवकों ("निवेदक") के नाम उनके स्वीकृत कार्यक्षेत्र (जिले) के साथ जानकारी के लिए दे रहे हैं :

आन्ध्र :
श्री सुरभीशेष शर्मा, महबूबनगर
श्री अच्युत गणेश देशपांडे, आदिलाबाद
श्री प्रभाकरजी, अनंतपुर

उत्कल :
श्री गोपबन्धु चौधरी, पुरी
श्री नवकृष्ण चौधरी,
संबलपुर व सुन्दरगढ़
श्री मनमोहन चौधरी, कटक
श्री ईश्वरलाल व्यास, बालेश्वर
श्री रमादेवी चौधरी, कैऊंझर
श्री वृन्दावन पात्र, पुरी
श्री रामचंद्र मिश्र, गंजाम
श्री विश्वनाथ पटनायक, कोरापुट
श्री शक्तिशेखर दास, कालाहांडी
श्री कुंजबिहारी दास, बलांगीर
श्री मदन मोहन साहू, संबलपुर
श्री मालती देवी चौधरी, सुन्दरगढ़
श्री सच्चिदानंद महंती, ढेंकानाल
श्री सुधांशु शेखर दास, मयूरभंज
श्री फकीर मिश्र, फुलवाणी

उत्तर प्रदेश :
श्री लोकेन्द्र सिंह, झाँसी
श्री राजबली तिवारी, फैजाबाद
श्री श्रीनारायण वाजपेयी, बाराबंकी
श्री रामगोपाल दीक्षित, हमीरपुर
श्री सुरेशराम भाई, इलाहाबाद
श्री छांदासिंह, फतेहपुर
श्री गजानंदजी, गाजीपुर
श्री जलेश्वरभाई, बलिया
श्री श्यामाचरण शास्त्री, गोरखपुर
श्री अवधबिहारी पांडये, आजमगढ़
श्री नर्मदाप्रसाद अवस्थी, उन्नाव
श्री श्रीकांत भाई, रायबरेली
श्री रघुराज सिंह, बहराईच
श्री भगवती प्रसाद राजौरिया, अलीगढ़
श्री जयंति प्रसाद, मथुरा
श्री गोविंदानंदजी, एटा
श्री पुजारी रायजी, बिजनौर
श्री गणेशदत्त वाजपेयी, लखनऊ
श्री शंकरनाथ गुप्ता, हरदोई
श्री बृजलाल मिश्र, कानपुर
श्री अभयजीत दुबे, जौनपुर
श्री तारादत्त जी शर्मा, नैनीताल
श्री सुन्दरलालजी, मेरठ
श्री रायचंद्र दौनारिया, मैनपुरी

पंजाब-हिमाचल :
श्री गणेशीलाल मुनशीराम, हिसार

बंगाल :
श्री फणी भूषण बैनर्जी, पुरुलिया
श्री शिशिरकुमार सेन, नदिया
श्री चारुचंद्र भंडारी,
कलकत्ता और २४ परगना
श्री कुमारचंद्र जाना, मेदिनीपुर
श्री लालबिहारी सिंह, वीरभूम
श्री आशादेवी, जलपैगुडी
श्री हरीनंदन ब्रह्मचारी, मालदा
श्री मोहिनीमोहन राय, बांकुड़ा

बम्बई शहर :
श्री श्रीराम चिंचलीकर, ए. वार्ड
श्री डैनियल मोजेस माजगाँवकर,
बी. वार्ड
श्री बद्रीनारायण रामप्रताप गाड़ोदिया,
सी. वार्ड
श्री इंद्रवदन रामभाई मेहता, डी. वार्ड
श्री एकनाथ पांडुरंग भगत, ई. वार्ड
श्री श्रीरंग देशपांडे, एफ. वार्ड
श्री गजानन पवार, जी. वार्ड
श्री जयकुमार वोरा, एच. वार्ड
श्री कांतिलाल डब्ल्यू. वोरा, एच-२ वार्ड
श्री एली रेमंड गडकर, एच-३ वार्ड

बम्बई-महाराष्ट्र :
श्रीमती निर्मला देशपांडे, औरंगाबाद
श्रीमती कुसुम देशपांडे, चांदा
श्री काका अत्रे, परभणी
श्री मोतीलाल मंत्री, बीड
श्री अमृत गडकरी, नांदेड
श्री मनोहरजी दिवान, बुलढाणा
श्री ठाकुरदास बंग, वर्धा जिला
और नागपुर तहसील
श्री पद्माकर बापट, भंडारा
श्री रा० ना० आढे, अकोला
श्री वसन्तराव गाडे,
नागपुर जिला (नागपुर त० छोड़कर)
श्री गोविंदराव शिंदे, रत्नागिरी

बंबई-गुजरात :
श्री द्वारकादास जोशी, महेसाणा
श्री चन्द्रवदन लश्करी, अहमदाबाद
श्री झवरभाई पटेल, बडौदा
श्री जगदीश काखिया, भरुच
श्री हर्षकांत वोरा, सूरत
श्री प्रबोध परीख, सांबरकांठा
श्री मगनलाल जोशी, पंचमहाल
श्री जी० जी० मेहता, बनासकांठा

मध्य-प्रदेश :
श्री गं० उ० पाटणकर, बैतुल
श्री दीपचंद जैन, रतलाम
श्री वि० स० खोडे,
निमाड (खरगौन)
श्री स्वामीप्रसाद अरजरिया, पन्ना
श्री स्वामीप्रसाद दीक्षित, सतना
श्री हरगोविंद विद्यार्थी, दतिया

राजस्थान :
श्री पूर्णचंद्र जैन, जयपुर
श्री देवदत्त निडर, सीकर
श्री सेवाराम, अलवर
श्री रामगोपाल गौड़, कोटा
श्री सुन्दरलाल आजाद, चितौडगढ़
श्री बनवारीलाल दैवी, चुरू
श्री बालकृष्ण एम० थानवी, जालौर
श्री भगवानदास माहेश्वरी, जैसलमेर
श्री तुलसीदास राठी, जोधपुर
श्री भवानी भाई, झुन्झुनु
श्री मुरलीधर चतुर्वेदी, टोंक
श्री बद्रीप्रसाद स्वामी, नागौर
श्री जगन्नाथ कसारा, बाँसवाडा
श्री मनोहरसिंह मेहता, भीलवाडा

निवेदकों के लिए सूचना :

विनोबा-प्रार्थना-प्रवचन शुल्क भेजें

पू० विनोबाजी के दैनिक प्रार्थना-प्रवचन ऊपर के सारे निवेदकों को १ अप्रैल से भेजना आरंभ कर दिया गया है। निवेदक अपना पूरा पता काशी-दफ्तर को शीघ्र भेजने की कृपा करें। निवेदकों को अपने जिले से प्रवचन का वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र २०) रुपये भिजवाना है, जिन्हें अभी भेजने में दिक्कत हो, वे जुलाई तक भी भेज सकते हैं। प्रवचन हरेक को १ जनवरी से भेजना तय हुआ है। चूंकि ३ माह के प्रवचन हमारे पास इकट्ठे हो गये हैं, उनकी फाईल बना कर साहित्य के साथ भेज दी जावेगी।

ग्राहकों से निवेदन

'भूदान-यज्ञ' की एक प्रति का मूल्य पुराने सिक्कों में दो आने है। नये सिक्कों में उसका मूल्य १३ नये पैसे होगा। वार्षिक चंदा ५) पाँच रुपये ही रहेगा।

ग्राहक-संख्या और चन्दा-समाप्ति की तारीख पते के साथ ही छपी रहती है। ग्राहक उसे नोट कर लें। पत्र-व्यवहार में ग्राहक-संख्या और पूरा पता हर बार साफ अक्षरों में लिखना आवश्यक है। —व्यवस्थापक, "भूदान-यज्ञ"

प्रकाशन-समाचार

नये प्रकाशन :

सफाई (विज्ञान और कला) के० वल्लभस्वामी पृष्ठ १६४, मूल्य ।॥)

प्रस्तुत पुस्तक में ग्राम-सफाई, खासकर मलमूत्र-सफाई और उसके साधन, प्रक्रियाओं तथा औजारों आदि के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। विषय को समझाने के लिए हर चीज के नक्शे भी दिये गये हैं। प्रारम्भ में गांधीजी और विनोबाजी के सफाई सम्बन्धी विचार भी संकलित हैं।

भूदान का लेखा पृष्ठ ५०, मूल्य ।)

इस पुस्तिका में भूदान-आन्दोलन के प्रारम्भ से लेकर दिसम्बर '५६ तक की प्रगति का लेखा आँकड़ों में दिया गया है। प्रत्येक प्रान्त के जिलेवार आँकड़े भूमि-प्राप्ति, वितरण, सम्पत्तिदान, जीवनदान, साधन-दान आदि के रूप में दरशाये गये हैं।

—अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

श्री विनोबाजी का पता : C/o खादी-वस्त्रालय, राजपालयम्
P. O. Rajapalayam (Dist. Ramnad) S. I.

विषय-सूची

१. सहजीवन का अमर संदेश	विनोबा	१
२. क्रांति-तीर्थ कोरापुट और क्रांति की प्रक्रिया !	दादा धर्माधिकारी	२
३. भूदान की ओर विदेशियों का आकर्षण	दामोदरदास मूंदड़ा	३
४. कोरापुट में एक साल का खेती का अनुभव : २.	गोविंद रेड्डी	४
५. साम्यवाद से साम्ययोग की ओर	मदन मोहन मिश्र	५
६. गांधीजी की राह पर	वल्लभस्वामी	५
७. हवा बनाने की कीमिया !	विनोबा	६
८. सहयोगी समाज की राह पर	,,	६
९. लोकवाणी की पुकार	लोचनदास मदन	७
१०. चुनाव बीते : आग कायम है !	सुरेश राम	७
११. कोरापुट के कुछ संस्मरण	गुरुशरण सक्सेना	८
१२. क्रांतिकारी खुरपी !	सरस्वती "कुमार"	९
१३. तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से—	महादेवी	१०
१४. तमिलनाड़ की भूदान-यज्ञ-वार्ता	मीरा व्यास	१०
१५. सर्वोदय-सम्मेलन : सूचनाएँ	—	११
१६. निवेदकों की नामावली, सूचना आदि	—	१२

सिद्धराज ढड्ढा सहमंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी

www.vinoba.in